अंक-73
वर्ष 2017-18
प्रथम छमाही

राजभाषा समर्पित अर्धवार्षिक गृह-पत्रिका

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण
(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय,भारत सरकार)
एमपीईडीए भवन, पनंपिल्ली एवन्यू, डाक पेटी सं 4272,
कोच्ची- 682036, भारत

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण
को
'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार'

माननीय राष्ट्रपति महोदय श्री रामनाथ कोविन्द से
दिनांक 14 सितंबर 2017 को राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में
'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' प्राप्त करते हुए
डॉ. ए. जयतिलक, भा.प्र.से, अध्यक्ष,
समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण

–

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण
को
प्रथम राजभाषा शील्ड

श्रीमती रीता तेवतिया, सचिव, से राजभाषा के श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिए
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय की राजभाषा शील्ड (प्रथम)
पुरस्कार प्राप्त करते हुए डॉ. ए.जयतिलक, भा.प्र.से, अध्यक्ष,
समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण

सागरिका

राजभाषा समर्पित अर्धवार्षिक गृह-पत्रिका

संरक्षक
डॉ.ए.जयतिलक, भा.प्र.से., अध्यक्ष

मार्गदर्शक
श्री.बी. श्रीकुमार, सचिव

संपादक
श्री हिमांशु श्रीवास्तव, उप निदेशक (रा.भा.)

उप संपादक
श्रीमती तुलसी नायर, हिन्दी अधिकारी

सम्पादन सहयोग
श्रीमती मृणालिनी पी आरेकर, व.हि.अनुवादक
श्रीमती संगीता जी, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक
श्रीमती सिंधु ए एस, हिन्दी टंकक

पत्राचार का पता
समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण
(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय,भारत सरकार)
एमपीईडीए भवन, पनंपिल्ली एवन्यू,
डाक पेटी सं 4272, कोच्ची- 682036, भारत
दूरभाष - 91 -484 - 2323245
फैक्स - 91 - 484 - 2313361

इस प्रकाशन में विद्वत्तापूर्ण लेखों में उल्लेख किए गए विचार लेखकों के दृष्टिकोण है और एमपीईडीए के विचारों का उससे कोई सरोकार नहीं है । इस प्रकाशन में विद्वत्तापूर्ण लेखों में दी गई सूचनाओं की वास्तविकता का उत्तरदायित्व लेखक पर निहित है । उसके लिए न तो एमपीईडीए और न ही संपादक मण्डल उत्तरदाई होंगे ।

अनुक्रमणिका

10 भारत का सीफूड निर्यात अप्रैल-जून 2017

14 ओडिशा विशेषांक

16 ओडिशा में श्रिम्प उत्पादन की प्रवृत्ति

28 फ्लो चार्ट : जलकृषि में बीज संग्रहण से पहले तालाब की तैयारी का महत्व

30 माछी अमृतसरी

31 कबीर दास

35 बेटियाँ

36 माँ भगवान का दूसरा रुप/ सोच

37 चमत्कारिक है ये समुद्री शैवाल

39 लीटोपिनस वन्नामी महाराष्ट्र के लवणयुक्त जमीन के लिए वरदान

41 एक आलू, दो अंडे और एक कॉफी बीन की कहानी

42 पश्चिम बंगाल में ट्रांस-बाउंड्री जल के परंपरागत लाभों का विस्तार

44 बंधनों से 'मुक्ति'

46 डिजिटल इंडिया

48 परिवार

52 लोकप्रियता की ओर हमारी हिंदी

54 हिन्दी में कार्यालय टिप्पण,पत्राचार हेतु मानक शब्द एवं वाक्यांश

ओडिशा विशेषांक

राजधानी	-	भुबनेश्वर
भाषा	-	उड़िया
विख्यात पर्यटन स्थल	-	कोणार्क सूर्य मंदिर, पुरी जगन्नाथ मंदिर, चिलिका झील
नृत्य	-	ओडिशी
राजकीय पशु	-	सांबर
राजकीय पक्षी	-	नीलकंठ

आवरण पृष्ठ अवधारणा -
श्रीमती तुलसी नायर,
हिन्दी अधिकारी

डॉ.ए. जयतिलक, भा.प्र.से
अध्यक्ष
समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण

सत्यमेव जयते

अध्यक्ष

प्रेरणोक्ति

भारत माता, पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक विभिन्न संस्कृतियों को अपने ममता के आँचल में समेटे एक ऐसी अलौकिक मातृभूमि है, जो अपनी विशिष्टताओं से प्रत्येक भारतवासी को, भारतीय होने के गर्व का अहसास कराती है। भारतीय भाषाएँ और इनकी समरसता, भारतमाता के आँचल की शोभा हैं और अनेकता में एकता का उत्कृष्ट नमूना हैं। स्वतन्त्रता संग्राम के समय ही हिन्दी भाषा ने अपनी उपयोगिता और लोकप्रियता को सिद्ध कर दिया था, इसी कारण से स्वतन्त्रता के उपरांत शासन की राजभाषा का उत्तरदायित्व भी प्राप्त हुआ।

एमपीईडीए संगठन ने राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में अपने ही द्वारा बनाए गए पूर्व कीर्तिमानों को ध्वस्त करके आगे बढ़ने का सिलसिला जारी रखा है तथा संगठन में कार्यान्वयन के अनूठे और अनवरत प्रयासों से लगातार तीसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर “राजभाषा कीर्ति पुरस्कार” प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त मंत्रालय और नगर स्तर पर भी लगातार तीन वर्षों से प्रथम स्थान पर रह कर, कार्यान्वयन के क्षेत्र में किए जा रहे अथक प्रयासों पर सफलता की मुहर लगा दी है।

सागरिका पत्रिका के 73वें अंक का प्रकाशन एक अति महत्वपूर्ण उपलब्धि है, पत्रिका के प्रकाशन से कर्मचारियों के बीच ना सिर्फ राजभाषा हिन्दी की लोकप्रियता बढ़ी है अपितु कर्मचारियों की रचनात्मकता एवं सृजनात्मकता को भी एक नई दिशा मिली है। पत्रिका के इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

(डॉ ए जयतिलक)

बी श्रीकुमार
सचिव
समुद्री उत्पाद निर्यात विकास
प्राधिकरण

सचिव

उद्गार

सर्वविदित है कि राष्ट्र निर्माण में संवाद के लिए समरूप भाषा का होना अत्यंत आवश्यक है और हमारे राष्ट्रनायकों ने इसी परिकल्पना को मूर्तरूप देते हुए हिन्दी को राजभाषा और राष्ट्र की प्रमुख भाषा का दर्जा दिया। आधुनिक युग में बहुत से ऐसे राष्ट्र यथा जापान, चीन एवं कोरिया इत्यादि हैं, जिन्होंने ना सिर्फ अपनी भाषा को जन-भाषा बनाने पर ज़ोर दिया बल्कि अपनी भाषाओं को तकनीकी भाषा के रूप में भी प्रतिस्थापित किया और पूरी दुनिया इसके परिणामों से अवगत है, इन देशों ने आज विश्व की पूरी अर्थव्यवस्था को अपने वश में कर लिया है।

भाषा का महत्व जानने के लिए इन देशों से अच्छा उदाहरण तो हो ही नहीं सकता। संरचनात्मक दृष्टिकोण से भारत एक बहुआयामी देश है और भाषाओं की बहुलता के कारण प्रत्येक क्षेत्र की सभ्यता का स्वरूप दूसरे से भिन्न है, इसके बावजूद एमपीईडीए संगठन ने जहां देश के विभिन्न प्रान्तों से निर्यात कार्यों को हिन्दी भाषा के माध्यम से आगे बढ़ाया है वह अपने-आप में एक मिसाल है। सभी दैनिक कार्यों के बीच राजभाषा समर्पित गृह-पत्रिका सागरिका ने कर्मचारियों के बीच एक नवीन चेतना का संचार किया है।

राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में लगातार राष्ट्रीय, मंत्रालय और नगर स्तर पर मिल रहे सम्मानों ने संगठन में कार्यरत कर्मचारियों के उत्साह को दुगुना कर दिया है। संगठन में राजभाषा कार्यान्वयन से जुड़े अधिकारियों को उनके अथक परिश्रम तथा उनकी महती भूमिका एवं संगठन की बहु-आयामी पत्रिका सागरिका के 73 वें अंक के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

(बी. श्रीकुमार)

संपादक की कलम से

प्रिय पाठकगण,

आपकी प्रिय गृह पत्रिका "सागरिका" के प्रत्येक अंक को जब विशेषांक बनाने का प्रण लिया गया, तब यह कार्य केवल और केवल चुनौतियों से भरा था । पत्रिका का प्रारूप तैयार करना, संबंधित विशेष सामग्री को एकत्र करना, उसके प्रस्तुतीकरण का तरीका निश्चित करना इत्यादि, इत्यादि । परंतु कहते हैं न कि जब किसी बात का संकल्प कर लें, तो कुछ भी असंभव नहीं होता और यही "सागरिका" के साथ हुआ।

प्रथम दो अंकों (69 एवं 70) के उपरांत 71 वाँ अंक उत्तर-पूर्व तथा 72 वाँ पश्चिम बंगाल विशेषांक प्रकाशित करने के साथ ही "सागरिका" एक नए आयाम की ओर, सफलता का एक नया आसमां चूमने निकल पड़ी ।

साथियों "सागरिका" का प्रस्तुत अंक "ओडिशा विशेषांक" है और बौद्ध संस्कृति की इस पावन धरती को अपने कलम से एक बार पुनः निखारने का अवसर मिला है । आशा है "सागरिका" पत्रिका के इस प्रकाशित होनेवाले 73 वें अंक के माध्यम से हम ओडिशा राज्य की उपलब्धियों, संस्कृति और कार्यकलापों पर विहंगम दृष्टि डाल पाएंगे ।

आशा करता हूँ कि "सागरिका" पत्रिका का यह अंक समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण संगठन में कार्यरत कार्मिकों को ओडिशा राज्य के निकट लाने का एक उत्तम प्रयास सिद्ध होगा ।

(हिमांशु श्रीवास्तव)

भारत का सीफूड निर्यात अप्रैल–जून 2017 में बढ़कर 9,066 करोड़ रुपये मूल्य का 2,51,735 मीट्रिक टन हुआ

- **अमेरिका, दक्षिण पूर्व एशिया, यूरोपीय संघ सबसे बड़े आयातक**
- **शीतित श्रिंप और शीतित स्क्विड निर्यात होने वाली प्रमुख मदें**

अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में लजीज शीतित श्रिम्प और शीतित स्क्विड की बढ़ती मांग के कारण भारत से समुद्री उत्पादों का निर्यात, अप्रैल–जून 2016 में 2,51,735 मीट्रिक टन (एमटी), जिसका मूल्य 9,066.06 करोड (अमे. डॉ. 142 बिलियन) का रहा, पिछले वर्ष इसी अवधि में ये 1.17 अरब डॉलर के साथ 2,01,223 मीट्रिक टन था।

भारतीय सीफूड के बड़े आयातकों के मामले में अमेरिका और दक्षिण पूर्व एशिया की स्थिति यथावत रही जबकि इनके बाद यूरोपीय संघ और जापान सीफूड आयात करने वाले देश रहे। इसी अवधि के दौरान चीन द्वारा भी सीफूड की जबर्दस्त मांग देखी गई।

सीफूड उत्पादों में शीतित श्रिम्प का निर्यात सबसे ज्यादा जारी रहा, कुल निर्यात में इसकी हिस्सेदारी मात्रात्मक रूप में 50.66 फीसदी जबकि डॉलर के लिहाज से कुल आय 74.90 फीसदी की रही। श्रिम्प का निर्यात मात्रात्मक में 20.87 फीसदी जबकि डॉलर के लिहाज से 21.64 फीसदी बढ़ा।

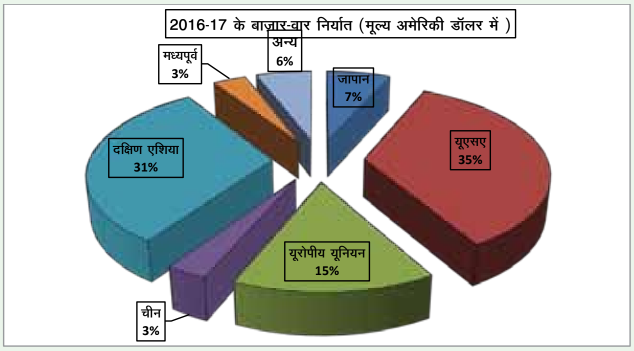

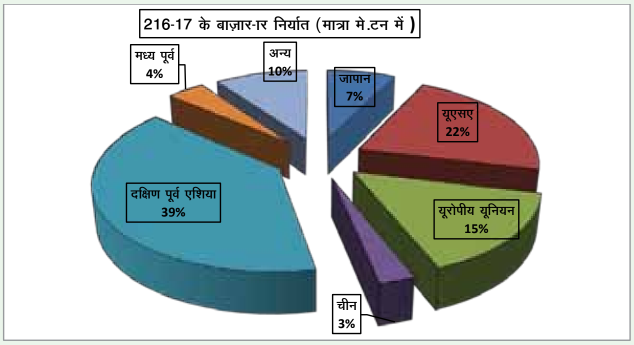

शीतित स्क्विड निर्यात होने वाली दूसरी सबसे बड़ी मद रही जिसके निर्यात में मात्रात्मक रूप में 7.82 फीसदी की हिस्सेदारी और डॉलर कमाई के लिहाज से 5.81 फीसदी की हिस्सेदारी रही, इस प्रकार डॉलर मूल्य के लिहाज से इसके निर्यात में 40.25 फीसदी की वृद्धि हुई।

शीतित श्रिम्प और शीतित स्क्विड के अलावा देश का दूसरा बड़ा सीफूड उत्पाद

शीतित मत्स्य रहा जिसके मात्रात्मक निर्यात में 24.96 फीसदी, रुपये की कमाई मामले में 17.55 फीसदी और डॉलर कमाई के मामले में 21.75 फीसदी की वृद्धि दर्ज की गई।

एमपीईडीए के चेयरमैन डॉ. ए. जयतिलक ने कहा, "श्रिम्प का बंपर उत्पादन, यूरोपीय संघ देशों द्वारा अस्वीकृति दर में आश्चर्यजनक कमी, गुणवत्ता सुनिश्चित करने के ठोस उपायों और मूल्यवर्द्धित उत्पादों के लिए उन्नत इंफ्रास्ट्रक्चर सुविधाओं के कारण भारत का सीफूड निर्यात तेजी से बढ़ा है।" संतोषजनक बात यह रही कि वैश्विक सीफूड कारोबार में लगातार अनिश्चितताओं के बावजूद इसके निर्यात में यह वृद्धि देखी गई।"

अमेरिका ने 499.28 मिलियन डॉलर का 54,344 मीट्रिक टन भारतीय सीफूड आयात किया जो डॉलर के संदर्भ में 35.05 फीसदी रहा जबकि यहां मात्रात्मक निर्यात में 39.56 फीसदी, रुपये से आय में 33.66 फीसदी और डॉलर से आय में 38.93 फीसदी की वृद्धि देखी गई।

भारतीय सीफूड उत्पादों के आयात के मामले में दक्षिण पूर्व एशिया लगातार दूसरा सबसे बड़ा क्षेत्र बना रहा, यहां हुए निर्यात से डॉलर की कमाई 31.26 फीसदी रही। इसके बाद निर्यात से डॉलर की कमाई के मामले में यूरोपीय संघ (14.70 फीसदी), जापान (6.68 फीसदी), पश्चिम एशिया (3. 47 फीसदी), चीन (3.06 फीसदी) और अन्य देशों (5.79 फीसदी) की हिस्सेदारी रही। कुल मिलाकर, दक्षिण पूर्व एशिया को किए गए निर्यात में 50.37 फीसदी की वृद्धि हुई जबकि यहां से रुपये की कमाई में 28.84 फीसदी और डॉलर से कमाई में 33.87 फीसदी की हिस्सेदारी रही।

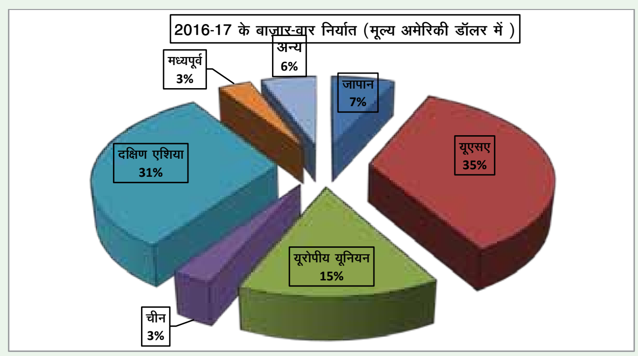

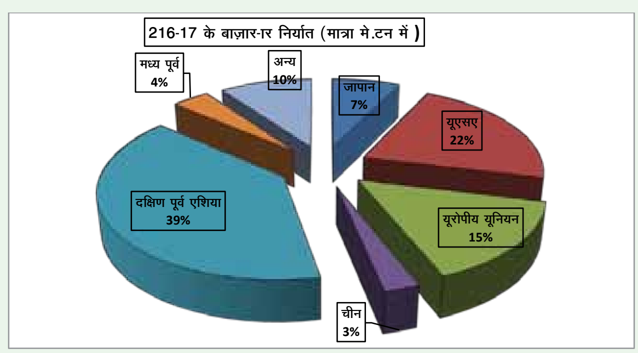

यूरोपीय संघ भारतीय सीफूड उत्पादों का तीसरा सबसे बड़ा आयातक बना रहा जहां मात्रात्मक रूप में कुल 15.23 फीसदी उत्पादों का निर्यात किया गया। यहां होने वाले निर्यात में शीतित श्रिम्प सबसे बड़ा आइटम रहा, यूरोपीय संघ को होने वाले कुल निर्यात में जिसकी मात्रात्मक हिस्सेदारी

38.85 फीसदी और डॉलर आय में 53.17 फीसदी की हिस्सेदारी रही।

जापान भारतीय सीफूड आयात करने वाला चौथा सबसे बड़ा देश रहा जिसकी आय में 6.68 फीसदी और मात्रात्मक रूप में निर्यात में 7.26 फीसदी की हिस्सेदारी रही। जापान को होने वाले निर्यात में शीतित श्रिंप सबसे बड़ा सीफूड आइटम रहा जिसकी मात्रात्मक रूप में निर्यात हिस्सेदारी 39.49 फीसदी और कुल निर्यात मूल्य में हिस्सेदारी 73.32 फीसदी रही।

चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही के दौरान कुल 1,27,521 मीट्रिक टन श्रिम्प का निर्यात किया गया जिसकी कुल कीमत 1066.97 मिलियन डॉलर थी। अमेरिका शीतित श्रिम्प का सबसे बड़ा आयातक बाजार (50,630 मीट्रिक टन) रहा, जिसके बाद दक्षिण पूर्व एशिया (41,934 मीट्रिक टन), यूरोपीय संघ (14,893 मीट्रिक टन), जापान (7,222 मीट्रिक टन), पश्चिम एशिया (3,753 मीट्रिक टन), चीन (2,804 मीट्रिक टन) और अन्य देशों (6,285 मीट्रिक टन) का स्थान रहा।

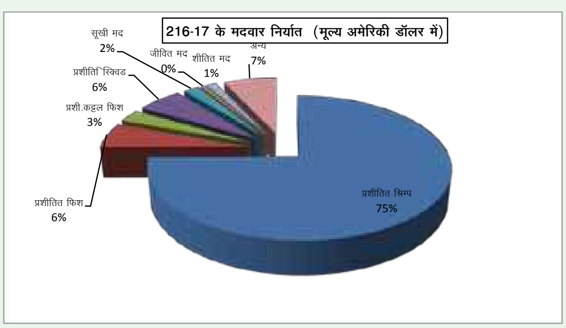

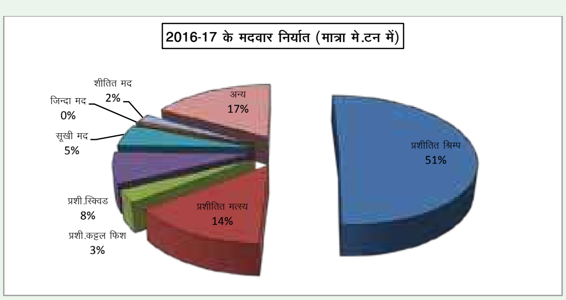

अप्रैल–जून 2017 के दौरान सीफूड का एक महत्वपूर्ण आइटम वन्नामी श्रिम्प का निर्यात 82,193 मीट्रिक टन से बढ़कर 92,341 मीट्रिक टन हो गया और निर्यात में इसकी मात्रात्मक वृद्धि 12.35 फीसदी दर्ज की गई। मूल्य के लिहाज से सबसे ज्यादा 51 फीसदी वन्नामी श्रिंप का निर्यात अमेरिका में किया गया, इसके बाद दक्षिण पूर्व एशियाई देशों को 25.99 फीसदी, यूरोपीय संघ को 9.87 फीसदी, जापान को 4.26 फीसदी, पश्चिम एशिया को 2.23 फीसदी और चीन को 1.58 फीसदी का निर्यात किया गया।

जापान मूल्य के लिहाज से 49.12 फीसदी हिस्सेदारी के साथ ब्लैक टाइगर श्रिंप का सबसे बड़ा बाजार बना, इसके बाद दक्षिण पूर्व एशिया (23.84 फीसदी) और अमेरिका (17.77 फीसदी) की हिस्सेदारी रही।

शीतित श्रिम्प अमेरिका को निर्यात होने वाला मुख्य आइटम बना रहा जहां डॉलर के लिहाज से इसकी हिस्सेदारी 95.82 फीसदी रही, जबकि वहां मात्रात्मक लिहाज से वन्नामी श्रिंप का निर्यात 35.20 फीसदी और डॉलर के लिहाज से 36.44 फीसदी बढ़ा।

दक्षिण पूर्व एशियाई बाजारों में होने वाले निर्यात के मामले में वियतनाम सबसे बड़ा आयातक रहा और डॉलर के लिहाज से इसकी आयात हिस्सेदारी 84.45 फीसदी रही, इसके बाद थाईलैंड (7.33 फीसदी), ताईवान (3.13 फीसदी), मलेशिया (2.01 फीसदी), सिंगापुर (1.76 फीसदी) और दक्षिण कोरिया (1.11 फीसदी) की आयात हिस्सेदारी रही। वियतनाम में ही कुल 69,988 मीट्रिक टन का भारतीय सीफूड निर्यात किया गया जबकि मात्रात्मक लिहाज से अमेरिका, जापान या चीन जैसे किसी भी बाजार की तुलना में यह सबसे बड़ा आयातक देश बना।

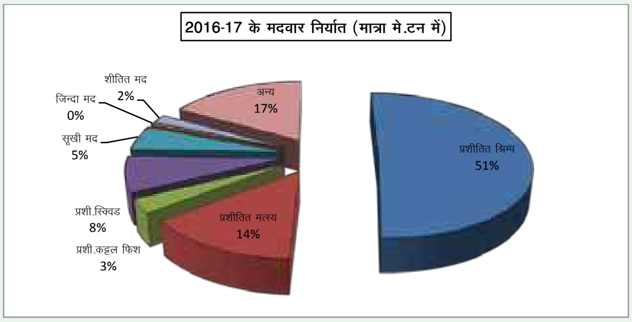

इस दौरान शीतित कट्टलफिश का मात्रात्मक निर्यात 5.07 फीसदी बढ़ा, जबकि इससे रुपये की आय में 20.84 फीसदी और डॉलर आय में 25.51 फीसदी की वृद्धि हुई।

वित्त वर्ष 2017–18 की पहली तिमाही में भारतीय तटों से कुल 2,51,735 टन समुद्री उत्पादों का व्यवहार पूरा किया, जिसका मूल्य रु 9066.06 करोड़ (1424.46 मिलियन डॉलर) था, इससे पूर्ववर्ती वित्त वर्ष की इसी अवधि के दौरान कुल 7699. 61 करोड़ रुपये (1166.59 मिलियन डॉलर) के 2,01,223 टन समुद्री उत्पादों का निर्यात किया गया था।

विजाग पोर्ट से रु 2,481.03 करोड़ मूल्य के सबसे ज्यादा 43,315 टन समुद्री माल का व्यवहार पूरा किया, इसके बाद कृष्णापट्टनम (19,917 टन; रु 1096.33 करोड़), कोच्ची (29,630 टन; रु 1,027.39 करोड़), कोलकाता (21,433 टन; रु 993.74 करोड़), जेएनपी (37,011 टन; रु 971.77 करोड़), पीपावाव (49,334 टन; रु 831.83 करोड़), तूतिकोरिन (10,986 टन; रु 582.50 करोड़) और चेन्नई (11,300 टन; 516.09 करोड़) ने व्यवहार पूरा किया।

सौजन्यः
श्री के. वी. प्रेमदेव
एमपीईडीए, मुख्यालय, कोच्ची

ओडिशा

सामान्य जानकारी

स्थान	:	अक्षांश:: 17.780 द एवं 22.730 उ
	:	देशांतर: 81.37 प एवं 87.53 पू
कुल क्षेत्र	:	155707 कि मी ² (भारत का 4%)
जिलों की संख्या	:	30
तटवर्ती जिले	:	06
कुल जनसंख्या (2011 जनगणना)	:	41,947,358
तट रेखा	:	480 कि मी
अंतर्देशीय मछुआरा गाँव	:	3065
समुद्री मछुआरा गाँव	:	813
मछुआरा जनसंख्या	:	14,80,704 (सीएमएफ़आरआई जनगणना 2010)
महाद्वीपीय शेल्फ	:	24,000 वर्ग कि मी
प्रति व्यक्ति मत्स्य की खपत	:	11.18 प्रति किलो/प्रति वर्ष

देश में सबसे बडा 9 वां मत्स्य उत्पादक राज्य

व्यापक मत्स्य नीति लागू करने वाला देश का प्रथम राज्य

0.116 मिलियन हेक्टेयर टैंक और तालाब

0.256 मिलियन हेक्टेयर जलाशय क्षेत्र

0.180 दलदलों और भीलियों के तहत मिलियन हेक्टेयर

0.298 मिलियन हेक्टेयर ज्वारनदमुख

8100 हेक्टेयर बैकवाटर क्षेत्र

32,587 हेक्टेयर खेती योग्य खारा पानी क्षेत्र

चिलिका झील : एशिया में सबसे बड़ी खारे पानी की झील 90,000 हे

मात्स्यिकी संसाधन

ओडिशा में उत्पादन (मी ट) :

क्रम सं.	विवरण	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17(पी)
1	मीठा जल	263862	300964	336216	393730
2	खारा पानी	30007	35373	40307	61268
3	कुल अंतर्देशीय	293869	336337	376523	454998
4	समुद्री	120020	133211	144755	153102
5	कुल	413889	469548	521278	608100

आडिशा में मात्स्यिकी : जिलावार, वर्षवार समुद्री मत्स्य उत्पादन

वर्ष	बालासोर	बालासोर	जगतसिंहपुर	केन्द्रपारा	पुरी	गंजाम	कुल
2013-14	29819	11076	30395	7474	30938	10319	120020
2014-15	35201	11721	36632	7009	11659	30989	133211
2015-16	39327	12006	34503	9059	37979	11881	144754

निर्यात अवसंरचना

पंजीकृत निर्यातक

1. पंजीकृत निर्यातकों की कुल सं : 41
2. उत्पादक निर्यातक (प्रशीतित) : 20
3. व्यापारी निर्यातक (प्रशीतित) : 17
4. शीतित मत्स्य निर्माता : 01
5. व्यापारी निर्यातक (शीतित मत्स्य) : 02
6. मार्गस्थ निर्यातक (प्रशीतित) : 04

प्रसंस्करण संयंत्र

1. प्रसंस्करण संयंत्रों की कुल सं : 23
2. ईयू अनुमोदित संयंत्र : 11
3. गैर ईयू संयंत्र :

   शीत भंडारों की कुल सं ; 25

   पंजीकृत मत्स्यन यानों की कुल सं : 550

   पीलिंग शेडों की कुल सं : 26

   ताजा शीतित मत्स्य हैंडलिंग केन्द्रों की कुल सं : 01

ओडिशा में श्रिम्प उत्पादन की प्रवृत्ति

(मात्रा मी.ट.में)

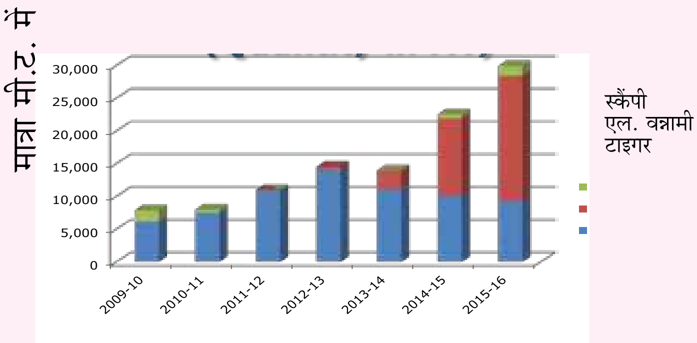

उपक्रम

ओडिशा राज्य, बंगाल की खाड़ी के साथ घिरा हुआ हमारे देश के पूर्वी भाग पर स्थित है जिसके दक्षिण में आंध्र प्रदेश, उत्तर में पश्चिम बंगाल, उत्तर पश्चिम में झारखंड और पश्चिम में छत्तीसगढ़ है । यह राज्य 1.5 लाख वर्ग कि.मी. तक फैला है और 36 मिलियन लोग यहां बसते हैं , राज्य को प्रशासनिक उद्देश्य से 30 जिलों में विभाजित किया गया है। उड़िया स्थानीय भाषा है और इसकी कई बोलियाँ हैं । ओडिशा हमारे देश के कुछ आदिवासी समुदायों का वास स्थान है और लगभग एक तिहाई क्षेत्र जंगल है। यह मुख्य रूप से एक भूमि आधारित अर्थव्यवस्था है जहां जनसंख्या का 60% अभी भी कृषि और आजीविका के लिए संबद्ध गतिविधियों पर निर्भर करता है। राज्य अर्थव्यवस्था की संरचना में एक क्रमिक बदलाव देखा गया है और वर्तमान में, सेवा क्षेत्र, राज्य के जीडीपी को अधिकतम योगदान देता है, जो कि स्थिर कीमतों पर 1.42 लाख करोड़ रुपये है। ओडिशा समृद्ध प्राकृतिक संसाधनों के साथ संपन्न है। देश के लगभग 32% लौह अयस्क भंडार, 25% कोयला भंडार, 55% बॉक्साइट भंडार, 95% क्रोमाइट भंडार और 92% निकल भंडार यहां पाए जाते हैं। पिछले दशक के आखिर में ओडिशा की अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ी है। 10 वीं और 11वीं योजना की अवधि में, राज्य द्वारा पंजीकृत आर्थिक विकास क्रमशः 9.51% और 8.53% है और अनुमान है कि राज्य की अर्थव्यवस्था 12 वीं योजना काल में 9.14% की वृद्धि दर पर स्थिर होगी। राज्य की राजधानी भुबनेश्वर को लगातार विश्व बैंक ने व्यापार करने के 3 सर्वश्रेष्ठ स्थानों में से एक के रूप में स्थान दिया है। ओडिशा की रेल, सड़क और वायु के माध्यम से हमारे देश के सभी प्रमुख स्थानों के साथ बहुत अच्छी कनेक्टिविटी है। कोलकाता-चेन्नई और कोलकाता-मुंबई को जोड़ने वाले एनएच5 और एनएच6 राज्य से होकर गुजरते हैं । सबसे ज्यादा निवेश प्राप्त करने वाले राज्यों में ओडिशा सबसे ऊपर है । संचयी रूप से, ओडिशा को सभी स्रोतों से लगभग 9 अरब डॉलर का निवेश प्राप्त हुआ है। यह निकट भविष्य में हमारे देश के प्राथमिक इस्पात, एल्यूमीनियम, लौह-मिश्र धातुओं के प्रमुख उत्पादक होने के साथ-साथ पावर हब के रूप में उभरने वाला है।

अतीत में ओडिशा ने जावा, सुमात्रा, बाली, बोर्नियो आदि कई देशों के साथ समुद्री व्यापार संबंध स्थापित किए थे। हस्तशिल्प, हथकरघा, कंप्यूटर सॉफ्टवेयर आदि क्षेत्रों में निर्यात के लिए भारी संभावनाएं हैं और साथ ही मानव कौशल और प्रतिभाओं को नहीं भुलाना

चाहिए और इनका पता लगाया जाना चाहिए। राज्य की पारिस्थितिकी पर्यटन की क्षमता बहुत विशाल है। प्राचीन समुद्र तटों के प्राकृतिक बंदोबस्त, चिलिका झील, अपने अद्वितीय वनस्पतियों और जीवों के साथ गहरे जंगल, ओलिव रिडले कछुए के नेस्टिंग मैदान आदि कुछ ऐसे नाम हैं, जो ओडिशा की सामूहिक संपत्तियां हैं ।

ओडिशा राज्य पूर्वीय तट में प्राकृतिक संसाधनों से भरा हुआ एक प्रमुख समुद्री राज्य है। समुद्री संसाधनों के 24,000 वर्ग कि मी महाद्वीपीय क्षेत्र के साथ 480 लंबी समुद्री तट रेखा पर्याप्त मात्रा में प्राकृतिक संपदा समुद्री खाद्य उत्पादन और निर्यात के लिए कई संभावनाएँ उपलब्ध कराती है। राज्य में 1.25 हेक्टर टैंकों और तालाबों, 2 लाख हेक्टर जलाशयों, 1.8 लाख हेक्टर दलदलों और झीलों और 1.71 लाख हेक्टर नदियों और कैनाल के ताजे जल संसाधन उपलब्ध हैं। खारा जल संसाधन में 0.79 लाख हेक्टर चिलिका झील, एशिया में सबसे बड़ा है । 32,587 हेक्टर उपयुक्त खारे पानी की भूमि और 8,100 हेक्टर बैकवाटर में निर्यात योग्य प्रजाति की जलकृषि विकसित हो रही है । तटवर्ती 6 जिले में से बालेश्वर और भद्रक में बड़े पैमाने पर खेती होने के कारण सन् 2005 तक ओडिशा झींगा उत्पादन में प्रमुख राज्यों में से एक गिना गया। बाद में 2009 में एल वन्नामी झींगा के आगमन और इसकी अत्यधिक उत्पादन क्षमता के कारण अन्य तटवर्ती जिले में भी बढोत्तरी हुई ओडिशा के झींगा पालन समुद्री खाद्य उत्पादन में बढ़ोतरी के लिए एक बड़ा अवसर प्रदान करता है , जो 2020 तक उत्पादन दो गुना के लक्ष्य के साथ राष्ट्रीय निर्यात में योगदान दे सकता है।

उत्पादकता में सुधार

2015-16 में झींगा जलकृषि के लिए विकसित 15700 हेक्टर क्षेत्र में से, 8989 हेक्टर का उपयोग ब्लैक झींगे और एल वन्नामी जलकृषि केलिए किया गया था, जिसमें 28,400 टन कुल झींगे का उत्पादन हुआ था, जबकि औसत वार्षिक उत्पादकता 3.16 मीट्रिक टन है। यद्यपि यह पिछले वर्ष की तुलना में अधिक है, हालांकि, 6700 हेक्टर के शेष क्षेत्र को जलकृषि और उत्पादकता बढ़ाने के अधीन लाया जा सकता है। राज्य में एल वन्नामी जलकृषि में तेजी आने और अधिक किसान इस प्रजाति को अपनाने के कारण उत्पादन 10 हजार हेक्टर में 60,000 मीट्रिक टन हो सकता है, जिसमें उत्पादन 6 मीट्रिक टन प्रति हेक्टर है।

जलकृषि के तहत अतिरिक्त क्षेत्र

एल वन्नामी कल्चर के लिए 5000 हेक्टर क्षेत्र के एक अतिरिक्त क्षेत्र और ब्लैक झींगा जलकृषि के लिए 2000 हेक्टेयर के लिए निजी और सरकार ने 30,000 टन वन्नामी और 5000 टन ब्लैक झींगा क्रमशः प्रति वर्ष अतिरिक्त उत्पादन के लिए भूमि पट्टे पर विकसित किया है। इस प्रकार न्यूनतम 115,000 मीट्रिक टन का कुल झींगा वर्तमान स्तर से 3.8 गुना अधिक हो सकता है।

प्रजाति	वर्तमान उत्पादन			अनुमानित उत्पादन		
	वर्तमान क्षेत्र (हे)	उत्पादकता (मीट/हे)	उत्पादन (मी ट)	क्षे (हे)	उत्पादकता (मीट/हे)	उत्पादन (मी ट)
एल वन्नामी	4439	4.33	19241	15000	6	90000
पी मोनोडोन	4552	2.02	9191	10000	2.50	25000

राज्य में 2500 मिलियन बीज की मांग को पूरा करने के लिए 20 अतिरिक्त झींगा हैचरी स्थापित करने की आवश्यकता है।

जलकृषि में विविधीकरण कार्यक्रम:

हमारे देश में आर्थिक महत्व की विविध प्रजातियों के जलकृषि उत्पादन को अपनाया जा रहा है और ओडिशा इस कार्यक्रम में पीछे नहीं है। एमपीईडीए, क्षेत्रीय प्रभाग, भुबनेश्वर ने वाणिज्यिक उत्पादन की आर्थिक व्यवहार्यता पर किसानों को तालाब में नियमित प्रदर्शनों के माध्यम से कीचड़ केकड़े और तिलापिया (गिफ्ट) जैसी प्रजातियों के उत्पादन को बढ़ाने हेतु प्रेरित करने के लिए समय पर कदम उठाया है। पिछले वित्तीय वर्ष के दौरान कीचड़ केकड़े और गिफ्ट पालन पर क्षेत्र प्रदर्शन किया गया था, जिसकी किसानों ने काफी सराहना की थी और प्रदर्शनी की वजह से वैज्ञानिक जलकृषि के लिए इन प्रजातियों के अधिक बीज की मांग हुई।

कीचड़ केकड़ा पालन पर नियमित रूप से 2010 से क्षेत्र प्रदर्शन क्षेत्रीय प्रभाग द्वारा आयोजित किए जाते हैं और इसमें केकड़ा बीज आरजीसीए हैचरी से लाया जाता है । वर्तमान में 430 हेक्टर से 243 मीट्रिक टन का उत्पादन 1000 हेक्टर तक बढ़ाया जा सकता है। बीज आवश्यकता को पूरा करने के लिए राज्य में 5 मिलियन क्षमता का एक केकड़ा हैचरी स्थापित किया जाना जरूरी है। जीवित केकड़ों का एक विपणन संगठित करने की जरूरत है। जगतसिंहपुर के शंखा गांव में श्री शत्रुघ्न बहेरा के 0.8 हेक्टेयर में और बालासोर जिले के साहाड़ा गांव के श्री अंजन दंडपाट के 0.6 हेक्टेयर तालाब में क्षेत्र प्रदर्शन किया गया था । स्थानीय प्राकृतिक स्रोत से संगृहीत बीजों का उपयोग करते हुए पारंपरिक घेरियों में समुद्री बैस कल्चर किया जा रहा है जिसका कुल उत्पादन बहुत कम है और स्थानीय बाजार में इसकी आपूर्ति की जाती है। समुद्री बैस प्राकृतिक स्रोतों में उपलब्ध होनहार प्रजातियां हैं। निर्यात के लिए व्यावसायिक उत्पादन पर्याप्त मात्रा में हैचरी बीज की उपलब्धता पर संभव है।

जगतसिंहपुर जिला के तुलंग गाँव मे आनुवंशिक रूप से उन्नत फार्म तिलपिया (गिफ्ट) पालन का एक क्षेत्र प्रदर्शन क्षेत्रीय प्रभाग द्वारा 216-17 में आयोजित किया गया जिसमें एक हेक्टर तालाब से 9. 20 टन मछलियों का उत्पादन हुआ था। गिफ्ट तिलपिया का ज्यादा उत्पादन होने पर इस प्रजाति की निर्यात संभावना है ।

उपर्युक्त क्षेत्र प्रदर्शन कार्यक्रम के अलावा नियमित रूप से क्षेत्रीय प्रभाग द्वारा किसानों के गाँव में जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया है।

गुणवत्ता मुद्दे

एलसी एमएस एमएस लैब जो मैसर्स इंटरफील्ड लेबोरेटरी द्वारा संचालित किया जा रहा था, पुराने एलसी एमएस एमएस उपकरण के ब्रेक-डाउन के कारण कुछ समय के लिए गैर-कार्यात्मक बन गई। इस पर काबू पाने के लिए एमईपीईडीए ने एक नया एलसी एमएस एमएस उपकरण, नया डीजी सेट और अन्य सहायक उपकरण खरीदे। प्रयोगशाला को एमपीईडीए द्वारा लिया गया है और उन्नयन और लैब को पुनरारंभ करने के लिए उपाय किए गए हैं। संविदात्मक तकनीशियनों को एमपीईडीए प्रयोगशाला अधिकारियों की सहायता के लिए नियुक्त किया जाता है। विभिन्न परीक्षण मापदंडों के लिए मानकीकरण किया जाता है और एनएबीएल

प्रमाणन का लाभ उठाया जाता है। प्रयोगशाला, ईआईसी से अनुमोदन के तुरंत बाद कार्यान्वित होगी जिसके लिए निरीक्षण / लेखा परीक्षा पूरी हो गयी है ।

इसी तरह, बालासोर और भूबनेश्वर की एलिसा प्रयोगशालाओं का एमपीईडीए द्वारा अधिग्रहण किया गया और उन्हें प्रतिबंधित एंटीबायोटिक दवाओं के पीएचटी टेस्ट के लिए सफलतापूर्वक संचालित किया जा रहा है।

फार्म और हैचरी नामांकन का काम शुरू किया गया है और सभी पुराने खेतों को नामांकित किया गया है । नए खेतों का नामांकन किया जा रहा है और नामांकन कार्ड वितरण के लिए तैयार हैं। जीपीएस सर्वेक्षण द्वारा नामांकन, फार्म्ड नमूनों की पीएचटी जांच में मदद करता है ताकि प्रतिजैविकी मुक्त श्रिम्प उत्पादन और ट्रेसेबिलिटी सुनिश्चित हो सके।

चिलिका झील में उत्पादन:

यह एशिया का सबसे बड़ा नदी मुहाने की विशेषता वाला खारा पानी का लैगून है और भारतीय उपमहाद्वीप में पाए जाने वाले प्रवासी जल पक्षियों के लिए सबसे बड़ा शीतकालीन स्थल है। मानसून और गर्मी के दौरान लैगून का क्षेत्र क्रमशः 1165 और 906 वर्ग किलोमीटर के बीच होता है। झील, पुरी, खुर्दा और गंजम जिलों में फैला है और इसे लवणता और गहराई के आधार पर चार पारिस्थितिक क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है: दक्षिणी क्षेत्र, केंद्रीय क्षेत्र, उत्तरी क्षेत्र और बाहरी चैनल। झील में कई द्वीप मौजूद हैं, जिनमें से प्रमुख हैं महिषा, ब्रह्मपुरा, नलबण, कालिजाई, हनीमून, ब्रेकफास्ट और पक्षी द्वीप इत्यादि। झील समृद्ध मत्स्य संसाधनों के साथ एक उच्च उत्पादक पारिस्थितिक तंत्र है। समृद्ध मत्स्यन तलछट 2,00,000 से अधिक मछुआरों की आजीविका को बनाए रखते हैं जो झील के आसपास रहते हैं। चिलिका झील के मात्स्यिकी संसाधन में 288 मत्स्य प्रजातियां, 28 झींगा और श्रिम्प प्रजातियां और दो कीचड़ केकडा प्रजातियां शामिल हैं जिनमें से एक और आधा दर्जन खाद्य केकडा प्रजातियां हैं। चिलिका झील मत्स्य पालन का एक स्थिर स्रोत है और एक अत्यधिक उत्पादक तटीय आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी तंत्र है, जो झील के आसपास और आसपास रहने वाले 0.2 मिलियन से अधिक गरीब लोगों की खाद्य और आजीविका सुरक्षा का समर्थन करता है।

झील का मात्स्यिकी उत्पादन, कैप्चर मात्स्यिकी एवं खारा पानी कल्चर स्रोतों से उत्पादित राज्य के कुल मत्स्य उत्पादन में क्रमशः 27% और 83% का योगदान देता है । यह उड़ीसा के समुद्री खाद्य निर्यात में भी योगदान देता है, जो मात्रा के आधार पर करीब 7.5% और मूल्य के आधार पर 6.7% है। पिछले कुछ दशकों के दौरान नृविषीय दबाव के साथ कई प्राकृतिक परिवर्तनों के चलते इस झील में तेजी से पर्यावरण-गिरावट देखी गई। झील के अधिक विकास के लिए जिम्मेदार चिलिका विकास प्राधिकरण (सीडीए) ने झील की बहाली के लिए कुछ व्यावहारिक कदम उठाए। सीएए मानदंडों के अनुसार उच्च व्यावसायिक उत्पादन के लिए वैज्ञानिक जलकृषि निषिद्ध है और अगर प्रभावी संरक्षण और प्रबंधन के उपाय सहित बीजों की रैंचिंग के साथ, स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी और मात्स्यिकी के नियमन के कार्यान्वयन लागू होते हैं तो कुछ वर्षों में चिलिका मत्स्य पालन में एक क्रांति के आने की संभावना नज़र आती है ।

क्षेत्रीय प्रभाग, भुबनेश्वर की साल 2016-17 की अन्य गतिविधियां

2016-17 में क्षेत्रीय प्रभाग, भुबनेश्वर में विविध कार्यक्रम का आयोजन हुआ उसका संक्षिप्त वर्णन तथा फोटो सामने दिया गया है ।

उत्पादन

ओडिशा राज्य के गंजम जिलों और जगतसिंहपुर, केंद्रपाड़ा, पुरी में झींगा उत्पादन 13,945.61 मी टन था। एल वन्नामी श्रिम्प के उत्पादन की प्रवृत्ति पिछले वर्ष की तुलना में बढ़ी है, जबकि अधिक किसानों द्वारा एल वन्नामी कृषि किए जाने की वजह से ब्लैक टाइगर श्रिम्प के उत्पादन में कमी देखी गई । यद्यपि वन्नामी श्रिम्प की व्यापक स्वीकार्यता है, लेकिन जगतसिंहपुर, केन्द्रपाड़ा और गंजम जिले में ब्लैक टाइगर के कृषित उत्पादन के लिए घेरियों में परंपरागत और व्यापक प्रणाली अपनाई जा रही है। बेहतर कृषि तकनीक के साथ इन खेतों से ब्लैक टाइगर उत्पादन में वृद्धि संभव हो सकती है। व्यवहार संहिता और जैव सुरक्षा उपायों को अपनाने के कारण रोग का उद्भव कुछ श्रिम्प कृषि वाले क्षेत्र तक सीमित थी। सी बैस और केकड़ा की कृषि ओडिशा में प्रारम्भिक अवस्था में है और झींगा की तुलना में इसका योगदान बहुत कम है। हालांकि, किसान, कुछ खारे पानी के क्षेत्रों में विविधीकरण की दिशा में रुचि दिखा रहे हैं जैसे कि गिफ्ट तिलापिया, सी बैस और केकड़ा कृषि ।

इमदाद

वर्ष 2016-17 के दौरान, कुल 7.74 हे डब्ल्यू एसए के 12 खेतों को रू 3,83,500 / - की वित्तीय सहायता के साथ श्रिम्प कृषि के तहत लाया गया था। वाणिज्यिक श्रिम्प हैचरी में चार ईटीएस, 3 पीसीआर प्रयोगशाला की स्थापना की गई और दो नए हैचरी प्रस्ताव को रू 29,04,498/- की कुल वित्तीय सहायता के साथ इमदाद सहायता के लिए मुख्यालय, कोच्ची भेजा गया। तीन हैचरियों को ऑनलाइन अग्रिम अनुमोदन प्राप्त हुए और एक नए फार्म को अग्रिम अनुमोदन प्राप्त हुआ ।

वैषयिक सहायता

क्षेत्रीय प्रभाग, भुबनेश्वर द्वारा कुल 381 जलकृषकों को वैषयिक सहायता प्रदान की गयी, जिसके द्वारा 90 लोगों के 204.65 हे जमीन का सर्वे किया गया, 17 कृषक वैषयिक सहायता के लिए पंजीकृत हुए हैं और 16 को 13.74 हे के लिए प्रोजेक्ट रिपोर्ट मिला। फार्म एनरोलमेंट, सी ए ए को आवेदन, परियोजना कार्यान्वयन तथा इमदाद सहायता दी गयी।

विस्तारण कार्यक्रम

(1)अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के लाभार्थी के लिए "प्रतिजैविकी मुक्त झींगा उत्पादन" के लिए पांच दिन के प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजनः

अनुसूचित जाति / जनजाति के लाभार्थियों के लिए गंजाम जिले के सुनापुर और पुरी जिले के करल गाँव में कुल 37 प्रशिक्षार्थियों के लिए प्रणाली के कोड को अपनाना और एंटीबायोटिक मुक्त झींगा उत्पादन पर 5 दिन के दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए । प्रशिक्षण के सभी विषय पावर पॉइंट पर दिखाया गया ताकि कृषक अच्छी तरह से समझ सकें, इससे सबंधित कुछ झलकियां नीचे दी जाती हैं ।

एम.पी.ई.डी.ए भुवनेश्वर के अधिकारियों द्वारा किसानों के लिए प्रशिक्षण

एम.पी.ई.डी.ए भुवनेश्वर के अधिकारियों द्वारा कृषकों को पावर पॉइंट प्रशिक्षण

अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति के लाभार्थी प्रशिक्षण लेते हुए

कृषकों के श्रिम्प तालाब में लाभार्थियों का प्रशिक्षण दौरा

कृषकों के झींगा तालाब में लाभार्थियों का प्रशिक्षण दौरा

अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के लाभार्थी को प्रमाण पत्र देते हुए

(2) सामान्य जाति कृषकों के लिए "एंटीबायोटिक मुक्त सुरक्षित झींगा उत्पादन" के लिए तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रमः

मत्स्यपालन गतिविधियां दिन व दिन बढ़ रही हैं, और विश्व बाजार में समुद्री खाद्य की मांग भी बढ़ रही है, किन्तु प्रतिबंधात्मक प्रतिजैविकी की उपस्थिति के कारण विश्व बाजार में हमारे उत्पादन अस्वीकृत किए जा रहे हैं। इसके लिए उच्च गुणवत्ता बनाने के लिए तालाब में बीएमपी अपनाने हेतु 03 दिनों के नीचे दर्शाए गए 6 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए ।

क्रम सं.	अवधि (से ...तक)	संस्थान	प्रशिक्षार्थी की संख्या
1	20.07.16 से 22.07.16	धोबेई जंगल, जगतसिंहपुर	20
2	10.08.2016 से 12.08.16	जंबू , केंद्रापड़ा	20
3	17.08.16 से 19.08.16	डंडाबेदी, जगतसिंहपुर	20
4	21.09.12.16 से 07.12.16	बांगोर, पुरी	21
5	23.09.16 से 21.09.16	तलमाल, पुरी	21
6	07.12.16 से 09.12.16	गजपति नगर, गंजाम	20

सैद्धांतिक कक्षा के अतिरिक्त कृषकों के लिए जलकृषि फार्म क्षेत्र के दौरे का आयोजन करके झींगा फार्म का अवलोकन किया गया। यहां प्रशिक्षुओं को जैव सुरक्षा उपायों को सीखने के लिए फार्म ऑपरेटर के साथ बातचीत और झींगा स्वास्थ्य जांच, फ़ीड जांच, फ़ीड ट्रे अवलोकन, जल गुणवत्ता निगरानी, झींगा विकास आदि समझाया गया।

श्री यू सी महापात्र, उप निदेशक, एम पी ई डी ए, सामान्य जाति के कृषकों को संबोधित करते हुए।

कृषक प्रक्षिक्षण लेते हुए।

सफल प्रक्षिक्षण के बाद लाभार्थी को प्रमाण पत्र देते हुए।

(3) जल कृषि विविधीकरण के लिए जागरूकता कार्यक्रम:

सी बास, तिलापिया और कीचड़ केकड़ा प्रजातियों की वैज्ञानिक जल कृषि में भी रुचि रखने वाले किसानों के लिए राज्य में गाँव के स्तर पर 6 कार्यक्रम आयोजित किए गए। नर्सरी, बीज का परिवहन, भोजन प्रबंधन और पानी की गुणवत्ता प्रबंधन पर चर्चा की गई। मत्स्यपालन में विविधीकरण पर मार्गदर्शिका , झींगा खेती के लिए बी.एम.पी और तालाब से सबंधित डाटा विवरण लिखकर रखने के लिए रजिस्टर प्रदान किए गए ।

मत्स्यपालन में विविधीकरण पर जागरूकता कार्यक्रम

(4) प्रतिबंधित एंटीबायोटिक, रसायन इत्यादि के खिलाफ अभियानः

क्षेत्रीय प्रभाग, भुबनेश्वर द्वारा झींगों की गुणवत्ता बढ़ाने हेतु जलकृषि फार्म में 20 जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया गया । इसका मुख्य उद्देश्य था किसानों को गुणवत्ता वाले बीज उपलब्ध कराना और निर्यात किए जाने वाले झींगा उत्पादों की गुणवत्ता सुधारने हेतु उन्हें जागरूक कराना, जिसमें राष्ट्रीय अवशेष नियंत्रण योजना (एन.आर.सी.पी) के तहत 78 फार्म तथा 13 हैचरी नमूनों की जांच की गई। राष्ट्रीय स्तर पर कीटनाशक अवशेष निगरानी कार्यक्रम (एम. पी आर. एन.एल.) के तहत भी नमूनों की जांच की गई। इन जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन करने से काफी हद तक प्रतिजैविकी का जलकृषि में उपयोग कम हुआ और 2014 से ओडिशा से निर्यातित झींगे में कोई प्रतिजैविकी नहीं पाया गया । यह अभियान नियमित रूप से जारी है।

(5)प्रतिजैविकी मुक्त स्वस्थ श्रिम्प बीज के उत्पादन केलिए श्रिम्प हैचरी प्रचालकों की बैठक :

प्रतिजैविकी मुक्त स्वस्थ बीज के उत्पादन पर एक जागरूकता अभियान गोपालपुर, गंजम जिले में श्रिम्प हैचरी ऑपरेटरों और तकनीशियनों के लाभ के लिए आयोजित किया गया था, जहां अधिकांश हैचरी स्थित हैं। 43 प्रतिभागियों ने कार्यक्रम में भाग लिया और एपीएम, आरजीसीए, गोपालपुर द्वारा बीज उत्पादन के प्रोबायोटिक मोड पर एक प्रस्तुति दी गई जो हैचरी मालिकों / तकनीशियनों को प्रतिजैविकी मुक्त श्रिम्प बीज के उत्पादन में हाल में हुई प्रगति और हैचरी नामांकन के बारे में जानने का अवसर दे सकता है।

श्री यू सी महापात्र, उप निदेशक,एम पी ई डी ए, प्रतिजैविकी के दुरुपयोग के बारे में कृषकों को संबोधित करते हुए

कृषक बैठक में भाग लेते हुए।

(6) कार्यशालाः

पुरी जिले के कई कृषक पारंपरिक पी मोनोडन खेती के स्थान पर एल वन्नामी जलकृषि कर रहे हैं। इसके अलावा वे तिलापिया कृषि और वैज्ञानिक कीचड़ केकड़ा कृषि में भी रुचि रखते हैं, इसलिए कृषकों के लिए दिनांक 20.12.2016 को एक दिवसीय जलकृषक सम्मेलन का आयोजन क्षेत्रीय प्रभाग, भुबनेश्वर द्वारा "जिम्मेदार झींगा कृषि" पर ब्लॉक ऑफिस, अस्तरंग , पुरी जिले में आयोजित किया गया। डॉ. पी जयशंकर, निदेशक,

आईसीएआर- सी आई एफ ए, भुबनेश्वर ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उन्होंने किसानों को जलकृषि, झींगा कृषि क्षेत्र में हाल में हुई प्रगति पर नज़र रखने और स्थायी और पर्यावरण संतुलित कृषि के अभ्यास के लिए कानून और नियम के विभिन्न प्रावधानों का पालन करने का अनुरोध किया। उन्होंने किसानों को सलाह दी कि वे बेहतर गुणवत्ता के उत्पादन के लिए तकनीकी विशेषज्ञों की सहायता लें । इस कार्यशाला में डॉ रीता जयशंकर, प्रमुख वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आई, पुरी, श्री. यू सी महापात्र, उप निदेशक, एमपीईडीए, क्षेत्रीय प्रभाग, भुबनेश्वर, श्री स्वाधीन कुमार नायक, अध्यक्ष, पंचायत समिति, अस्तरंग, श्री संतोष दलाई, जिला मत्स्य अधिकारी, पुरी, श्री प्रभात स्वाइन, प्रमुख वैज्ञानिक आई सीए आर- सी आई एफ ए, भुवनेश्वर, श्री टी.एन.विष्णु ,सहायक निदेशक आदि सहभागी रहे और इस कार्यशाला को सफल बनाया।

(7) अंतरराज्यीय अध्ययन दौराः

आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा में 8 झींगा कृषकों के लिए एक अंतरराज्यीय अध्ययन दौरा आयोजित किया गया और कृषकों ने विभिन्न झींगा, स्कैम्पी फ़ार्मों, चारा मिल, मानिकोंडा, कंकिपुड़ी, भीमावरम में आरजीसीए सुविधाओं का दौरा किया गया। किसानों को नई प्रौद्योगिकियों को उजागर करने के लिए यह अंतरराज्यीय अध्ययन दौरा बहुत ही लाभकारी सिद्ध हुआ।

आरजीसीए अधिकारी गिफ्ट तिलापिया के बारे में किसानों को बताते हुये

आर जी सी ए, के सभी नर स्कैम्पी फ़ार्मों का दौरा

भीमावरम के पास के झींगा फार्म

भीमावरम के पास के मेसर्स यूनो फीड्स में किसानों का दौरा

एम पी ई डी ए क्यूसी लैब, भीमावरम का दौरा

अन्य कार्यक्रम

(1) कृषि महोत्सव, भुबनेश्वर

मत्स्य विभाग, ओडीशा सरकार द्वारा दिनांक 10/4/2017 से 13/4/2017 तक आयोजित चार दिवसीय कृषि महोत्सव भुबनेश्वर में आयोजित किया गया था जिसमें क्षेत्रीय प्रभाग ने भाग लिया और झींगा/मत्स्य पालन से सबंधित लाभार्थी की जानकारी के लिए एक प्रदर्शन स्टाल भी रखा गया। जलकृषि और गुणवत्ता नियंत्रण आदि की पुस्तकें आगंतुक को दी गईं और एमपीईडीए की गतिविधियों तथा अक्वा अक्वारिया 2017 बारे में भी समझाया गया। महोत्सव में पूरे मत्स्य पालन मंडप को दूसरा पुरस्कार मिला।

राज्य मत्स्य पालन विभाग के साथ बैठक और सम्पर्क

विभिन्न तटीय जिलों में जिला मात्स्यिकी कार्यालय द्वारा आयोजित सीएए की डीएलसी बैठकों में इस केंद्र के अधिकारियों ने विशेष आमंत्रित के रूप में भाग लिया। एसएलसी बैठकें भी आयुक्त-व-सचिव, मात्स्यिकी एवं एआरडी विभाग, भुबनेश्वर के कक्ष में हुईं। जगतसिंहपुर और पुरी जिले में भूमि पट्टा समिति की बैठकों में सदस्य के रूप में भाग लिया। आयुक्त-व-सचिव, मात्स्यिकी एवं एआरडी विभाग, ओडिशा सरकार, मात्स्यिकी निदेशक, मुख्य सचिव आदि की विभिन्न बैठकों में भाग लिया और उपयुक्त सुझाव दिए गए ।

(ii) कृषित श्रिम्प/स्कैम्पी की गुणवत्ता जांचः

87 श्रिम्प/स्कैम्पी / मत्स्य के नमूनों और 4 चारा नमूनों को एनआरसीपी के तहत क्यूसी लैब, एचओ को भेजा गया और 20 एमपीआरएनएल कार्यक्रम के तहत मत्स्य / क्रस्टेशियन नमूनों को क्यूसी लैब, एचओ को भेजा गया। हैचरी की तिमाही मोनीटरिंग के तहत एनआरसीपी के अधीन क्यूसी प्रयोगशाला, एचओ को कुल 3 हैचरी नमूने भेजे गए, 0 9 हैचरी (चिंराट बीज) नमूनों को एकत्रित किए गए और डबल्यूएसएसवी संक्रमण की जांच की गयी ।

गोपालपुर - ऑन - सी में पीसीआर लैब

गोपालपुर- ऑन -सी में पीसीआर लैब ओडिशा / एपी राज्य के श्रिम्प कृषकों और श्रिम्प हैचरी ऑपरेटरों की जरूरतों को पूरा करने के लिए कार्यरत है। वित्तीय वर्ष के दौरान डबल्यूएसएसवी के लिए 107 नमूनों का परीक्षण किया गया और 104 नकारात्मक और 03 सकारात्मक पाए गए। वित्तीय वर्ष के दौरान परीक्षण किए गए नमूनों का विवरण नीचे दिया गया है :

परीक्षण	परीक्षणों की कुल संख्या	नकारात्मक (सं.)	सकारात्मक (सं.)
पीसीआर (डबल्यूएसएसवी)	107	104	03
एमबीवी	एमबीवी -112	109	-
एमजीआर	एमजीआर -113	113	-
नेक्रोसिस	नेक्रोसिस -111	109	-
स्ट्रैस	स्ट्रैस -113	113	21

उ क्षे प्र, भुबनेश्वर

संयंत्र निरीक्षण / प्रमाणीकरण जैसे सामान्य कार्य के अलावा एसआरडी, भुबनेश्वर ने प्रसंस्करण संयंत्र तकनीशियनों के लिए “एचएसीसीपी को अपनाने” पर प्रशिक्षण सहित कई विस्तारण कार्यक्रमों का आयोजन किया है।

नाक्सा

एक्वा सोसायटी के माध्यम से जलकृषि के लिए सहकारी दृष्टिकोण की दिशा में सभी 6 तटीय जिलों में नाक्सा कार्यक्रम चलाने वाले तीन क्षेत्रीय प्रबंधक हैं। अब तक कई एक्वा सोसाइटियां पंजीकृत की गयी है और इन संबंधित क्षेत्रों से रोग संक्रमण को दूर रखने हेतु टिकाऊ फसलों के लिए कृषकों द्वारा बीएमपी को लागू किया जा रहा है।

सौजन्यः
यू. सी. महापात्र
एमपीईडीए, क्षेत्रीय प्रभाग
भुबनेश्वर

फ्लो चार्ट : जलकृषि में बीज संग्रहण से पहले तालाब की तैयारी का महत्व

अवांछनीय सामग्री (काला कीचड़, काली स्लरी, आदि.) को हटाने के लिए फसल के तुरंत बाद पूरे तालाब में पानी से फ्लश करना (आवश्यकता होने पर प्रेशर पम्प का इस्तेमाल करे ।	पिछली फसल में अगर काला कीचड़ जमा हो तो उसे निकाले और ऐसी जगह नेस्तोनाबूत करे जंहा से वह वापस आपके तालाब में न आये ।	काली मिट्टी को सामान्य मिट्टी में परिवर्तित किया जाना है ।
↓		
तालाब की मिट्टी को 20% नमी की मात्रा तक सूखने दे	तालाब का तल सुखाने के लाभः 1) मिट्टी की नमी की मात्रा कम कर देता है ताकि हवा (ऑक्सीजन) मृदा कणों में प्रवेश कर सके 2)ऑक्सीजन की आपूर्ति में सुधार और कार्बनिक पदार्थों के एरोबिक अपघटन में वृद्धि 3) अगली फसल की शुरुआत से मिट्टी की ऑक्सीजन मांग कम	
↓	यदि तालाब सुखाया नहीं जा सकता तो तालाब के अंदर चार बांधो के सलग्न खाई तैयार करें और इस खाई से पानी को लगातार हटा दें ।	यदि अभी भी तालाब सुखाया नहीं जा सकता है तो गीली तैयारी विधि अपनाएं।
↓		
मिट्टी का पी.एच. 7 एकक करे । (इस हेतु नीचे दिए गए टेबल का इस्तेमाल करे ।	1.तालाब की मिट्टी के लिए सबसे अच्छा पी.एच 7 एकक माना जाता है । 2.मिट्टी में फास्फोरस की अधिकतम उपलब्धता आमतौर पर मिट्टी का पी.एच. 7 एकक होने पर होती है । 3.जब मिट्टी का पी. एच. 7 से 8 एकक होता है, तो अधिकांश मिट्टी सूक्ष्मजीवों, और विशेष रूप से मिट्टी जीवाणु, सबसे अच्छा कार्य करते हैं ।	
↓		
मिट्टी का पी.एच. एकक — कृषि चूने की मात्रा किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर 5.0 से निचे — 3,000 5.0 - 5.4 — 2,500 5.5 - 5.9 — 2000 6.0 - 6.4 — 1,500 6.5 - 7.0 — 1000	कृषि चूना शुष्क (ज्यादा सूखे हुए) मिट्टी के साथ प्रतिक्रिया नहीं करेगा, इसलिए चूना डालते समय मिट्टी में 20% गीलापन होना चाहिए । कृषि चूने के फायदे: 1.टोटल अल्कालिनिटी और टोटल हार्डनेस पानी में अच्छी मात्रा में रहते हैं। 2.प्रकाश संश्लेषण के लिए अकार्बनिक कार्बन की उपलब्धता जिससे खाद्य जीवों की उत्पादकता बढ़ जाती है । 3.पीएच में व्यापक दैनिक परिवर्तन के खिलाफ बफर जल (यानि दैनिक पी.एच. फ्लक्चुएशन ज्यादा नहीं होता है ।)	
↓		
तालाब के तल की मिट्टी (5 से 10 सेंटीमीटर) को जुताई करें ।	1.जुताई करने से मिट्टी के साथ कृषि चूने की प्रतिक्रिया में सुधार होता है । 2.सूरज की रोशनी और ऑक्सीजन तालाब के तल की मिट्टी में ऑक्सीकरण करता है और जैविक अपशिष्ट हो जाता है ।	

तालाब के तल की मिट्टी में 3-4 किलोग्राम / हेक्टेयर प्रो-बायोटिक (डि-नायट्रीफायिंग बैक्टीरिया युक्त) डलवाये ।	कार्बनिक पदार्थों के अपघटन को प्रोत्साहित करने के लिए गीली मिट्टी पर प्रो-बायोटिक (डि-नायट्रीफायिंग बक्टीरिया युक्त) डलवाये जाते है ।
↓ **3 - 5 दिनों की प्रतीक्षा करें ।**	
जुताई के बाद मिट्टी कॉम्पैक्ट करें ।	पानी के साथ तालाब को भरने के बाद टर्बीडिटी की स्थिति से बचने के लिए ।
↓	
छानने के चार चरणों (20, 40, 60, 80 छेद प्रति वर्ग इंच जाल आकार) का उपयोग करके फिल्टर किए गए पानी के साथ तालाब को 1.5 मीटर पानी की गहराई तक भरें	उचित फिल्ट्रेशन अवांछित सामग्री / मछली / अंडों / आदि की प्रविष्टि को प्रतिबंधित करेगा।
↓	
तालाब में पानी भरने के बाद 10 दिनों तक प्रतीक्षा करें ।	पानी फ़िल्टर करने के बावजूद पानी में कुछ मछली तथा अन्य जीवों के अंडे हो सकते है, दस दिनों के बाद उन में से अंडे बाहर निकल सकते हैं।
↓	
700 किलो ग्राम ब्लीचिंग पाउडर (30% एकाग्रता) प्रति हेक्टेयर प्रति 1 मीटर पानी की गहराई लागू करें ।	तालाब के पानी में सभी जीवित चीजों को मारना, जिससे तालाब के पानी में हानिकारक घटको की संभावना कम हो जाती है ।
↓ **3 से 5 दिनों की प्रतीक्षा करें ।**	
30-40 किलोग्राम / हेक्टेयर प्लांक्टन फ़्लूम डेवलपर और खनिज मिश्रण लागू करें ।	बीज तालाब के पानी में छोड़ने से पहले तालाब में प्लांक्टन का विकास करें क्योंकि, झींगा/ मछली के बच्चों को तालाब में प्लवक के रूप में प्राकृतिक भोजन की आवश्यकता होती है।
↓	
प्लैंकटन ब्लूम सही रखने के लिए सेची डिस्क (30 सेमी व्यास) का उपयोग करे ।	सेची डिस्क रीडिंग को 25 से 35 सेंटीमीटर के बीच रखें । यदि यह 35 सेंटीमीटर से अधिक है तो यह प्लांक्टन की कम आबादी को इंगित करता है, इसलिए प्लांक्टन ब्लूम डेवलपर की एक और खुराक को लागू करें। यदि यह 25 सेंटीमीटर से कम है, तो यह प्लांक्टन की जरुरत से ज्यादा आबादी को इंगित करता है, इसलिए 20% जल विनिमय किए जाएं।
↓	
तालाब बीज संग्रहण के लिए तैयार है ।	

सौजन्यः
अतुल साठे
एमपीईडीए, क्षेत्रीय प्रभाग, पनवेल

माछी अमृतसरी

आवश्यक सामग्री

1.	मछली	-	500 कि.ग्राम
2.	अंडा	-	1
3.	लाल मिर्च पाउडर	-	1 बडी चम्मच
4.	बेसन	-	1 कप
5.	अजवाइन	-	1 बड़ी चम्मच
6.	अदरक का पेस्ट	-	1 बड़ी चम्मच
7.	नीबू का रस	-	1 बड़ी चम्मच
8.	लहसुन का पेस्ट	-	1 बड़ी चम्मच
9.	चाट मसाला	-	1 बड़ी चम्मच
10.	जीरा पाउडर	-	1 बड़ी चम्मच
11.	काली मिर्च पाउडर	-	1 बड़ी चम्मच
12.	तेल	-	आवश्यकतानुसार
13.	नमक	-	स्वादानुसार
14.	नीबू	-	2 गोल टुकड़े

पकाने की विधि

- मछली के टुकड़ों को पानी से अच्छी तरह साफ करें ।
- अब मछली के टुकड़ों को लाल मिर्च पाउडर, नमक, अजवाइन, अदरक का पेस्ट, जीरा पाउडर, लहसुन का पेस्ट, काली मिर्च पाउडर, नीबू का रस, बेसन डालकर अच्छी तरह मिला लीजिए ।
- अब कढाई में तेल डालकर गरम कीजिए, अब एक बाउल में अंडा फोड कर डालें और अच्छी तरह फेट लीजिए । अब मछली के एक एक टुकड़े को अंडे में डुबो कर गरम तेल में डाले और गोल्डन ब्राउन होने तक तल कर निकाल लें । माछी अमृतसरी तैयार । अब मछली के टुकड़े के ऊपर चाट मसाला डालें और नीबू टुकड़ों से सजाए । हरी चटनी के साथ खाइए ।

हरी चटनी के लिए

धनिया पत्ता - एक कप
पुदीने के पत्ते - एक कप
लहसुन - 3-4
चाट मसाला - बड़ा चम्मच
हरी मिर्च - 4
नीबू का रस - एक बड़ा चम्मच
नमक - स्वादानुसार

- अब पुदीने के पत्ते, नमक, धनिया पत्ता, लहसुन, हरी मिर्च, चाट मसाला और थोड़ा पानी डालकर मिक्सी में बारीक पीस लीजिए । अब उसमें नीबू का रस डालकर अच्छी तरह मिला लीजिए । हरी चटनी तैयार ।

सौजन्य:
संगीता जी
एमपीईडीए, क्षेत्रीय प्रभाग, विजयवाडा

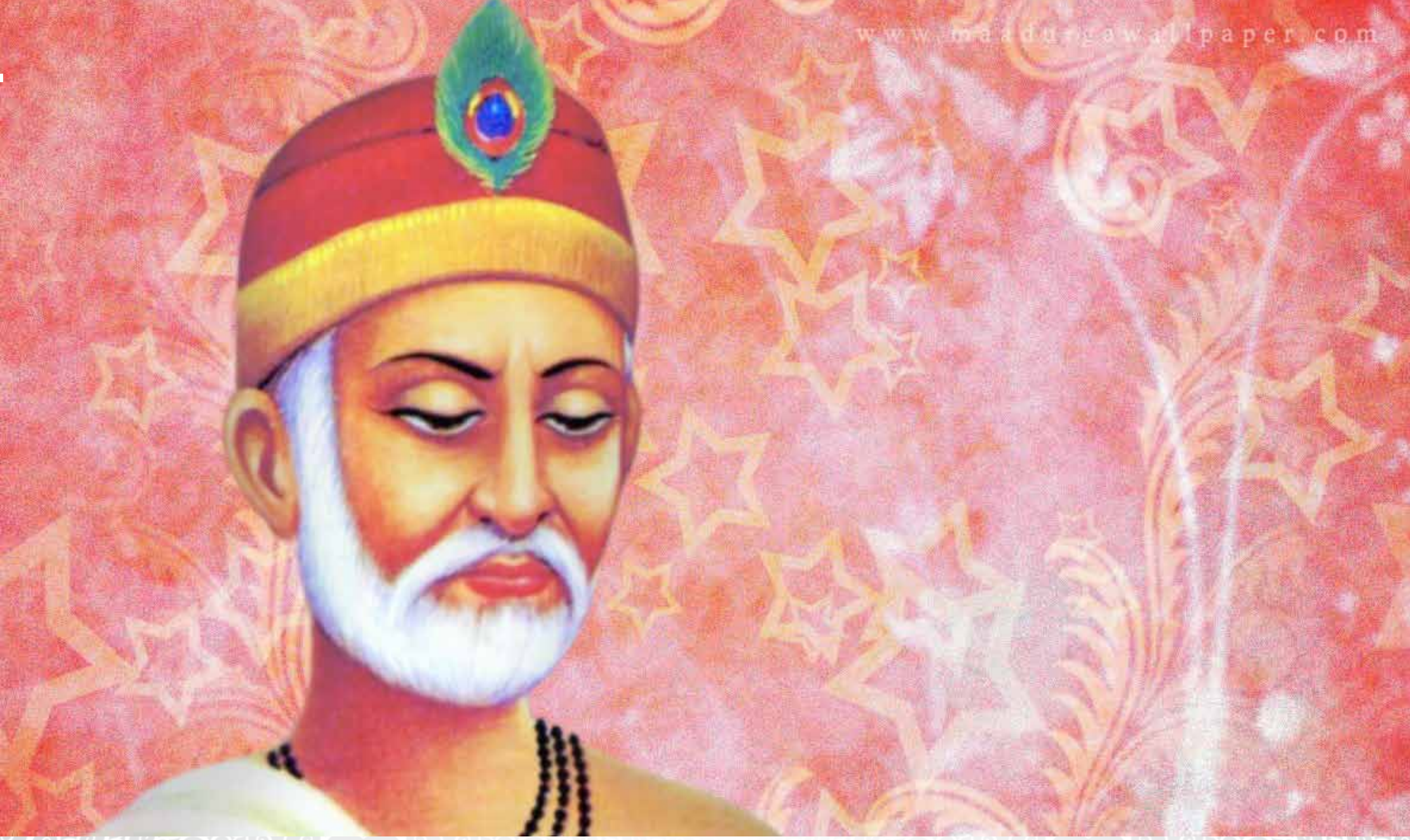

कबीर दास

कबीर हिंदी साहित्य के महिमामण्डित व्यक्तित्व हैं। कबीर के जन्म के संबंध में अनेक किंवदन्तियाँ हैं। कुछ लोगों के अनुसार वे रामानन्द स्वामी के आशीर्वाद से काशी की एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से पैदा हुए थे, जिसको भूल से रामानंद जी ने पुत्रवती होने का आशीर्वाद दे दिया था। ब्राह्मणी उस नवजात शिशु को लहरतारा ताल के पास फेंक आयी।

कबीर के माता- पिता के विषय में एक राय निश्चित नहीं है कि कबीर “नीमा” और “नीरु” की वास्तविक संतान थे या नीमा और नीरु ने केवल इनका पालन- पोषण ही किया था। कहा जाता है कि नीरु जुलाहे को यह बच्चा लहरतारा ताल पर पड़ा पाया, जिसे वह अपने घर ले आया और उसका पालन-पोषण किया। बाद में यही बालक कबीर कहलाया।

कबीर ने स्वयं को जुलाहे के रुप में प्रस्तुत किया है -

"जाति जुलाहा नाम कबीराबनि बनि फिरो उदासी।"

कबीर पन्थियों की मान्यता है कि कबीर की उत्पत्ति काशी में लहरतारा तालाब में उत्पन्न कमल के मनोहर पुष्प के ऊपर बालक के रूप में हुई। ऐसा भी कहा जाता है कि कबीर जन्म से मुसलमान थे और युवावस्था में स्वामी रामानन्द के प्रभाव से उन्हें हिंदू धर्म का ज्ञान हुआ। एक दिन कबीर पञ्चगंगा घाट की सीढ़ियों पर गिर पड़े थे, रामानन्द जी उसी समय गंगास्नान करने के लिये सीढ़ियाँ उतर रहे थे कि उनका पैर कबीर के शरीर पर पड़ गया। उनके मुख से तत्काल "राम-राम" शब्द निकल पड़ा। उसी राम को कबीर ने दीक्षा-मन्त्र मान लिया और रामानन्द जी को अपना गुरु स्वीकार कर लिया। कबीर के ही शब्दों में- "हम कासी में प्रकट भये हैं, रामानन्द चेताये"। अन्य जनश्रुतियों से ज्ञात होता है कि कबीर ने हिंदु-मुसलमान का भेद मिटा कर हिंदू-भक्तों तथा मुसलमान फक़ीरों का सत्संग किया और दोनों की अच्छी बातों को आत्मसात कर लिया।

जनश्रुति के अनुसार कबीर के एक पुत्र कमल तथा पुत्री कमाली थी। इतने लोगों की परवरिश करने के लिये उन्हें अपने करघे पर काफी काम करना पड़ता था। साधु संतों का तो घर में जमावड़ा रहता ही था।

कबीर को कबीर पंथ में, बाल- ब्रह्मचारी और विराणी माना जाता है। इस पंथ के अनुसार कामात्य उसका शिष्य था और कमाली तथा लोई उनकी शिष्या। लोई शब्द का प्रयोग कबीर ने एक जगह कंबल के रुप में भी किया है। वस्तुतः कबीर की पत्नी और संतान दोनों थे। एक जगह लोई को पुकार कर कबीर कहते हैं :-

"कहत कबीर सुनहु रे लोई।
हरि बिन राखन हार न कोई।।"

कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे-

"मसि कागद छूवो नहीं, कलम गही नहिं हाथ।"

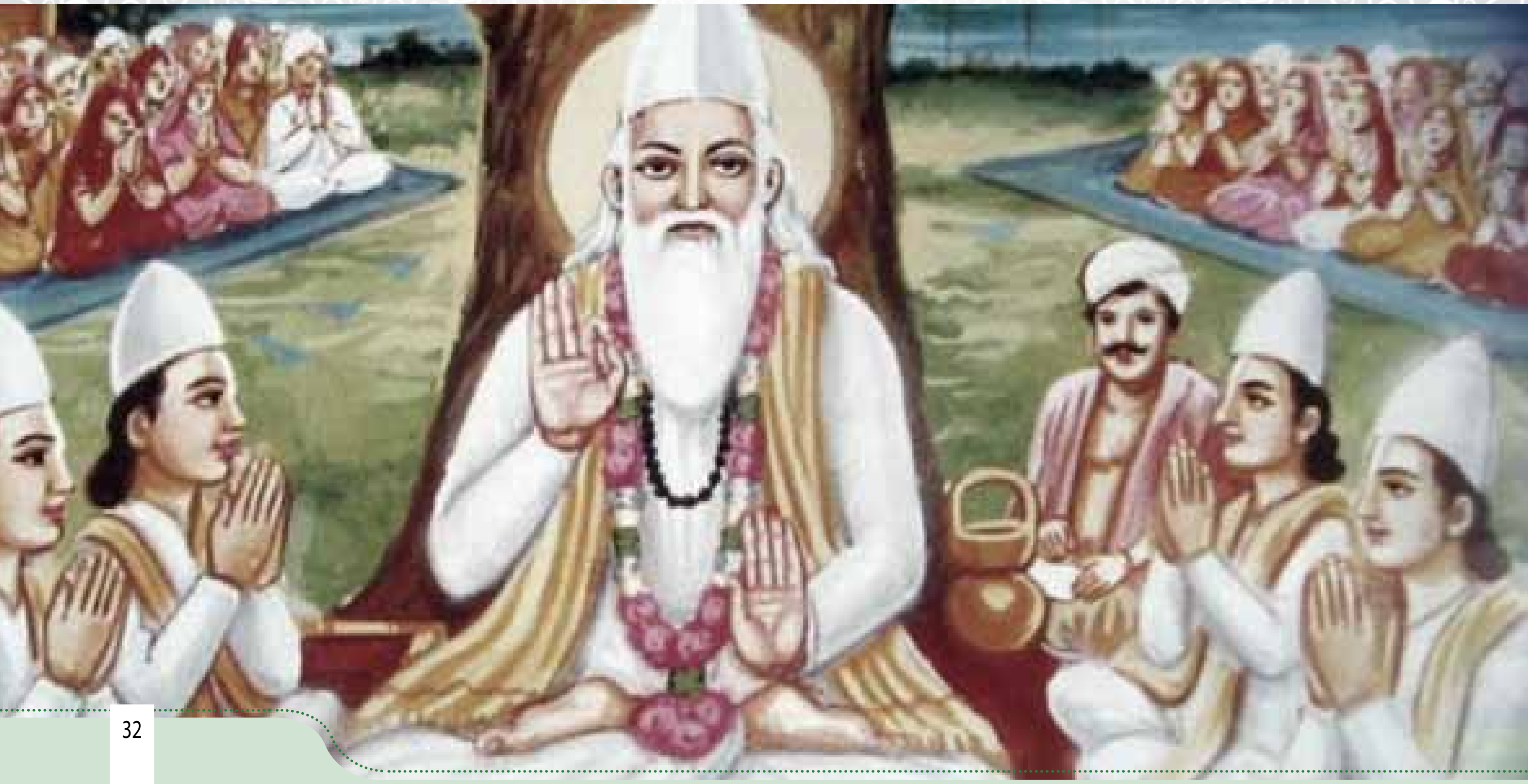

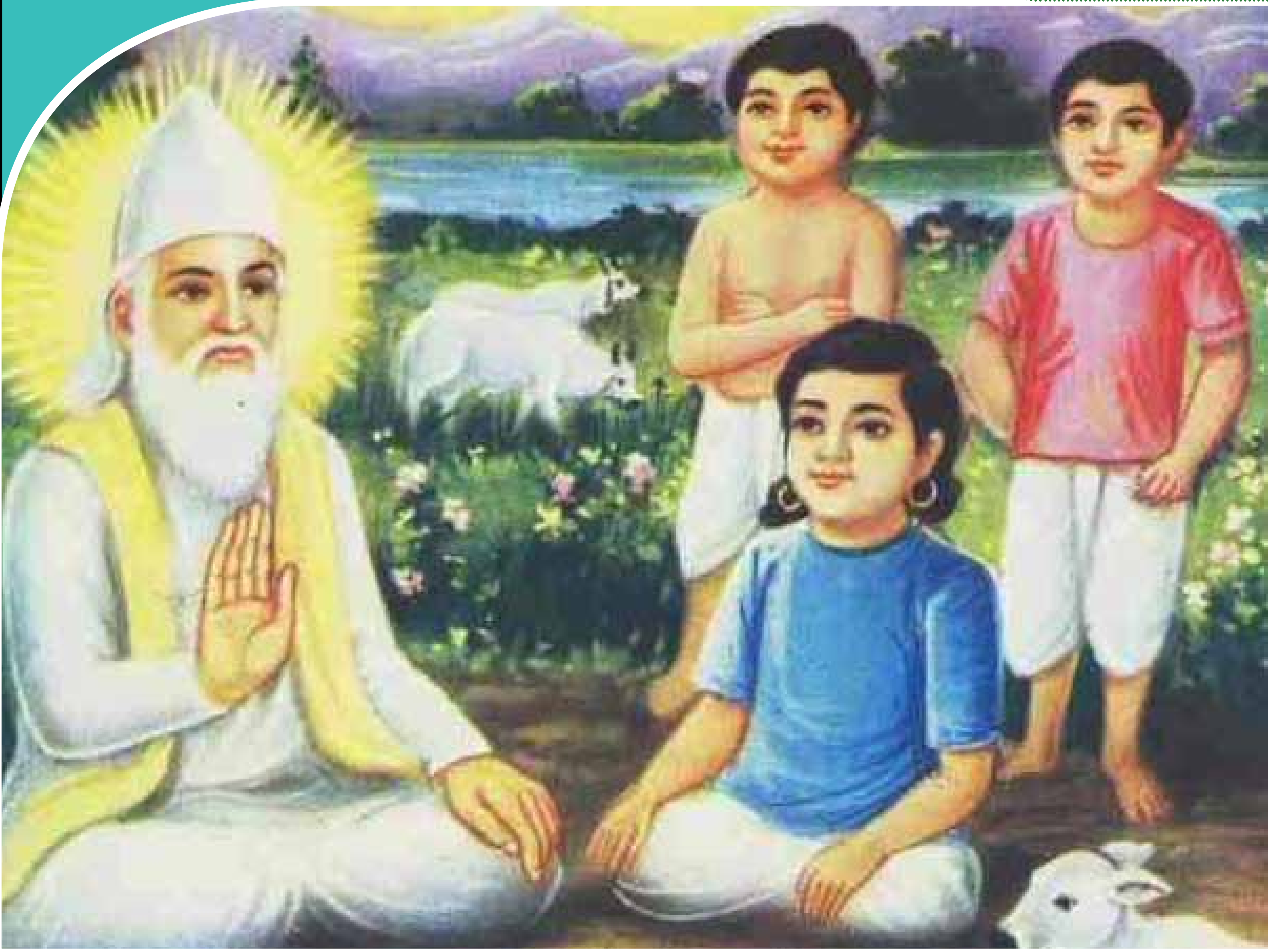

उन्होंने स्वयं ग्रंथ नहीं लिखे, मुँह से जो भी बोला उनके शिष्यों ने उसे लिख लिया। आप के समस्त विचारों में रामनाम की महिमा प्रतिध्वनित होती है। वे एक ही ईश्वर को मानते थे और कर्मकाण्ड के घोर विरोधी थे। अवतार, मूर्त्ति, रोज़ा, ईद, मसजिद, मंदिर आदि को वे नहीं मानते थे।

कबीर के नाम से मिले ग्रंथों की संख्या भिन्न-भिन्न लेखों के अनुसार भिन्न-भिन्न है। एच.एच. विल्सन के अनुसार कबीर के नाम पर आठ ग्रंथ हैं। विशप जी. एच. वेस्टकॉट ने कबीर के 84 ग्रंथों की सूची प्रस्तुत की तो रामदास गौड ने "हिंदुत्व" में 71 पुस्तकें गिनायी हैं।

कबीर की वाणी का संग्रह "बीजक" के नाम से प्रसिद्ध है। इसके तीन भाग हैं- रमैनी, सबद और सारवी यह पंजाबी, राजस्थानी, खड़ी बोली, अवधी, पूरबी, व्रजभाषा आदि कई भाषाओं की खिचड़ी है।

कबीर परमात्मा को मित्र, माता, पिता और पति के रूप में देखते हैं। यही तो मनुष्य के सर्वाधिक निकट

रहते हैं। वे कभी कहते हैं-

"हरिमोर पिउ, मैं राम की बहुरिया" तो कभी कहते हैं, "हरि जननी मैं बालक तोरा"

उस समय हिंदु जनता पर मुस्लिम आतंक का कहर छाया हुआ था। कबीर ने अपने पंथ को इस ढंग से सुनियोजित किया जिससे मुस्लिम मत की ओर झुकी हुई जनता सहज ही इनकी अनुयायी हो गयी। उन्होंने अपनी भाषा सरल और सुबोध रखी ताकि वह आम आदमी तक पहुँच सके। इससे दोनों सम्प्रदायों के परस्पर मिलन में सुविधा हुई। इनके पंथ मुसलमान-संस्कृति और गोभक्षण के विरोधी थे।

कबीर को शांतिमय जीवन प्रिय था और वे अहिंसा, सत्य, सदाचार आदि गुणों के प्रशंसक थे। अपनी सरलता, साधु स्वभाव तथा संत प्रवृत्ति के कारण आज विदेशों में भी उनका समादर हो रहा है।

कबीर का पूरा जीवन काशी में ही गुजरा, लेकिन वह मरने के समय मगहर चले गए थे। वह न चाहकर भी, मगहर गए थे। वृद्धावस्था में यश और कीर्ति की मार ने उन्हें बहुत कष्ट दिया। उसी हालत में उन्होंने बनारस छोड़ा और आत्मनिरीक्षण तथा आत्मपरीक्षण करने के लिये देश के विभिन्न भागों की यात्राएँ कीं। कबीर मगहर जाकर दुःखी थे:

"अबकहु राम कवन गति मोरी।

तजीले बनारस मति भई मोरी।।"

कहा जाता है कि कबीर के शत्रुओं ने उनको मगहर जाने के लिए मजबूर किया था। वे चाहते थे कि कबीर की मुक्ति न हो पाए, परंतु कबीर तो काशी मरन से नहीं, राम की भक्ति से मुक्ति पाना चाहते थे:

"जौ काशी तन तजै कबीरातो रामै कौन निहोटा।"

अपने यात्रा क्रम में ही वे कालिंजर जिले के पिथौराबाद शहर में पहुँचे। वहाँ रामकृष्ण का छोटा सा मन्दिर था। वहाँ के संत भगवान गोस्वामी जिज्ञासु साधक थे किंतु उनके तर्कों का अभी तक पूरी तरह समाधान नहीं हुआ था। संत कबीर से उनका विचार-विनिमय हुआ। कबीर की एक साखी ने उन के मन पर गहरा असर किया-

'बन ते भागा बिहरे पड़ा, करहा अपनी बान।

करहा बेदन कासों कहे, को करहा को जान।।'

वन से भाग कर बहेलिये के द्वारा खोये हुए गड्ढे में गिरा हुआ हाथी अपनी व्यथा किस से कहे ?

सारांश यह कि धर्म की जिज्ञासा सें प्रेरित हो कर भगवान गोसाई अपना घर छोड़ कर बाहर तो निकल आये और हरिव्यासी सम्प्रदाय के गड्ढे में गिर कर अकेले निर्वासित हो कर ऐसी स्थिति में पड़ चुके हैं।

कबीर आडम्बरों के विरोधी थे। मूर्त्ति पूजा को लक्ष्य करती उनकी एक साखी है -

पाहन पूजे हरि मिलैं, तो मैं पूजौंपहार।

था ते तो चाकी भली, जासे पीसी खाय संसार।।

119 वर्ष की अवस्था में मगहर में कबीर का देहांत हो गया। कबीरदास जी का व्यक्तित्व संत कवियों में अद्वितीय है। हिन्दी साहित्य के 1200 वर्षों के इतिहास में गोस्वामी तुलसीदास जी के अतिरिक्त इतना प्रतिभाशाली व्यक्तित्व किसी कवि का नहीं है।

बेटियाँ

अगर बेटा वारिस है, तो बेटी पारस है ।
अगर बेटा वंश है, तो बेटी अंश है ।।
अगर बेटा आन है, तो बेटी गुमान है ।।
अगर बेटा संस्कार है, तो बेटी संस्कृति है ।।
अगर बेटा आग है, तो बेटी बाग है ।।
अगर बेटा दवा है, तो बेटी दुआ है ।।
अगर बेटा भाग्य है, तो बेटी विधाता है ।।
अगर बेटा शब्द है, तो बेटी अर्थ है ।।
अगर बेटा गीत है, तो बेटी संगीत है ।।
अगर बेटा प्रेम है, तो बेटी पूजा है ।।
जब इतनी कीमत हैं बेटियाँ !
तो फिर क्यों खटकती हैं मन को बेटियाँ !
जबकि सबको पता है,
बेटों को भी जन्म देती हैं बेटियाँ !

संकलनः
हेमावती पी कुन्धाडिया
एमपीईडीए, क्षेत्रीय प्रभाग, मुंबई

माँ भगवान का दूसरा रूप

माँ भगवान का दूसरा रूप
उनके लिए दे देंगे जान

हमको मिलता जीवन उनसे
कदमों में है स्वर्ग बसा जिनके

संस्कार वह हमें बतलाती
अच्छा बुरा हमें सिखलाती

गलतियों को हमारी सुधारती
प्यार वह हम पर बरसाती

तबीयत अगर हो जाए खराब
रात रात भर जागती रहती

माँ बिना जीवन है अधूरा
खाली-खाली सूना-सूना

खाना पहले हमें खिलाती
बाद में वह खुद खाती

हमारी खुशी में वह खुश हो जाती
दुख में हमारे आँसू बहाती

कितने खुशनसीब है हम
पास हमारे है माँ

होते बदनसीब वो कितने
जिनके पास ना होती माँ ।

सोच

लोग जितना समय दूसरों को समझाने मे लगाते हैं,
अगर उसका आधा समय भी खुद पर लगाए तो
जीवन में कहीं आगे निकल सकते हैं ।
जिंदगी में आप जो करना चाहते हैं
वो जरुर कीजिये,
ये मत सोचिए कि लोग क्या कहेंगे ।
क्योंकि लोग तो तब भी कुछ कहते है,
जब आप कुछ नहीं करते ।
वहाँ तक तो साथ चलो जहाँ
तक साथ मुमकिन है
जहाँ हालात बदल जाए वहाँ
तुम भी बदल जाना।

सौजन्यः
तेजस्वी रामचंद्र सावंत
श्री रामचंद्र एस.सावंत की सुपुत्री
एमपीईडीए, क्षेत्रीय प्रभाग, मुंबई

चमत्कारिक है ये समुद्री शैवाल

धरती पर समुद्र का हिस्सा 70 से 75 प्रतिशत है। 25 से 30 प्रतिशत धरती पर अधिकतर हिस्सा नदियों और उनके जंगलों का है। धरती पर प्रमुख रूप से कुल 5 महासागर हैं- प्रशांत महासागर, अटलांटिक महासागर, आर्कटिक महासागर तथा दक्षिणी महासागर। इसके अलावा कैस्पियन सागर, मृत सागर, लाल सागर, उत्तर सागर, लापतेव सागर, भूमध्य सागर हैं। इसके अलावा 2 प्रमुख खाड़ियां हैं- बंगाल की खाड़ी और अरब की खाड़ी ।

प्रमुख नदियों में नील, अमेजन, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र, वोल्गा, टेम्स, गंगा, हडसन, मर्रे डार्लिंग, मिसीसिपी, मैकेंजी, यमुना, नर्मदा, गोदावरी, कांगो, यांग्त्सी, मेकोग, लेना, आमूर, ह्वांगहो आदि नदियां हैं। उक्त संपूर्ण जलनिधि या जलराशि में अथाह जल है। इन जलराशियों में लाखों तरह के जीव-जंतु और प्रजातियां निवास करती हैं। इन्हीं जलराशियों में हजारों ऐसी वस्तुएं हैं, जो कहीं चिकित्सा की दृष्टि से सबसे उत्तम हैं तो कहीं आयु बढ़ाने के लिए। लेकिन इस सबके अलावा ऐसी भी दैवीय वस्तुएं हैं जिनके आपके घर या पास में होने से यह चमत्कारिक रूप से आपको आर्थिक और शारीरिक लाभ देने लगती हैं। इन्हीं में से एक है समुद्री शैवाल ।

क्या होता है शैवाल : भूमंडल पर पाए जाने वाले पौधों का विभाजन दो बड़े विभागों में किया गया है। जो पौधे फूल तथा बीज नहीं उत्पन्न करते उनको क्रिप्टोगैम कहते हैं और जो फूल, फल एवं बीज उत्पन्न करते हैं वे फेनेरोगैम कहलाते हैं। शैवालों का वर्गीकरण क्रिप्टोगैम के थैलोफाइटा वर्ग में किया गया है। ये पौधे निम्न श्रेणी के होते हैं, जिनमें पर्णहरित पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है जिसके कारण ये हरे रंग के होते हैं। कुछ शैवाल ऐसे भी होते हैं जिनका रंग लाल, भूरा अथवा नीला-हरा भी होता है। अधिकांश शैवाल तालाब, रुके हुए जलाशय, नदी के किनारे तथा समुद्रों में पाए जाते हैं। कुछ शैवाल पादपों के तनों पर या पत्थर की शिलाओं के ऊपर हरी परत के रूप में उगा करते हैं। कुछ नीले-हरे वर्ण के शैवाल स्नानागार, नदी तथा तालाबों के किनारों पर भी उगते हैं जिन्हें हम काई समझते हैं।

अधिकांश शैवाल पौधों के समान सूर्य के प्रकाश

की उपस्थिति में प्रकाश संश्लेषण की क्रिया द्वारा अपना भोजन स्वंय बनाते हैं अर्थात् स्वपोषी होते हैं। ये एक कोशिकीय से लेकर बहु-कोशिकीय अनेक रूपों में हो सकते हैं, परन्तु पौधों के समान इसमें जड़, पत्तियां इत्यादि रचनाएं नहीं पाई जाती हैं। ये नम भूमि, अलवणीय एवं लवणीय जल, वृक्षों की छाल, नम दीवारों पर हरी, भूरी या कुछ काली परतों के रूप में मिलते हैं।

समुद्री वनस्पतियों में समुद्री शैवाल का महत्व ज्यादा है। शैवाल मुख्यतः 3 प्रकार की होती है। शैवाल का उपयोग औषधि, व्यवसाय और भोजन के रूप में किया जाता है। कुछ जहरीली शैवाल होती है। क्लोरेला नामक शैवाल को कैबिन के हौज में उगाकर अंतरिक्ष यात्री को प्रोटीनयुक्त भोजन, जल और ऑक्सीजन सभी प्राप्त हो सकते हैं।

शैवाल से ईंधन : हरा ईंधन विशिष्ट रूप से ताड़ के तेल अथवा मक्के से बनाया जाता है। लेकिन इस बात के कई प्रमाण हैं कि समुद्री शैवाल जैव ईंधन के लिए कच्चा माल हो सकते हैं। हालांकि समुद्री शैवाल को व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य हरे ईंधन में तब्दील करना लंबी प्रक्रिया है।

शैवाल से कैंसर का इलाज : जर्मनी में रिसर्चर शैवाल की मदद से कैंसर का इलाज ढूंढ रहे हैं। शोधकर्ताओं को एक खास पदार्थ मिला है जिससे शैवाल खुद को समुद्री हमलों से बचाते हैं। डॉयचे वेले की खबर अनुसार इसके लिए उत्तरी जर्मनी के शहर कील में तटीय शोध और मैनेजमेंट सेंटर की प्रयोगशाला में पौधों को फिल्टर किया जाता है। कील में रिसर्चर कर रहे लेवेंट पीकर बताते हैं कि दिलचस्प प्राकृतिक तत्वों को ढूंढने के लिए समुद्र में हजारों मीटर गहरी डुबकी लगाना जरूरी नहीं है, “सब कुछ तट पर मिल जाता है। हम फिर इन्हें जमा करते हैं और प्रयोगशाला में इन पर काम करते हैं ताकि कैंसर खत्म करने की इनकी क्षमता का पता लगाया जा सके।”

शैवाल से मोटापे को कम करते है : ब्रिटन के शोधकर्ताओं के मुताबिक मोटापे का इलाज सीवीड यानी समुद्री शैवाल से हो सकता है। शैवाल में पाया जाने वाला एल्जिनेट नाम का फाइबर शरीर में जमा वसा को 75 फीसदी तक कम कर सकता है। मोटापे पर क़ाबू पाने के लिए शैवाल से इलाज को बाक़ी सभी से बेहतर समझा जा रहा है।

खाद्य के रूप में : नील हरित शैवाल को धान की खेती में खाद्य के रूप में काम में लिया जाता है। नील हरित शैवाल खाद के द्वारा अधिक उपज प्राप्त करने के लिए धान की रोपनी समाप्त होने के एक सप्ताह बाद खेत में 5-7 से.मी. पानी भरें। यदि पानी नहीं हो तो उसके बाद खेत में 10 कि.ग्रा. प्रति हे. के दर से नील हरित खाद का छिड़काव बराबर रूप से कर दें। खेत में शैवाल डालने के बाद कम से कम 10 दिनों तक पानी भरा रहना चाहिए। इस तरह से एक ही खेत में कई सालों तक लगातार प्रयोग करते रहने से ये खाद आने वाले कई एक सालों तक डालने की जरूरत नहीं पड़ती है, इस प्रकार शैवाल खाद का पूरा लाभ फसलों को मिलता है जिससे उपज में वृद्धि होती है।

खाई जा सकने वाली शैवाल : सिवार (Kelp) यह एक प्रकार की समुद्री वनस्पति है। समुद्र की गहराइयों में इस वनस्पति के जंगल के जंगल विद्यमान हैं। यह भी शैवाल की तरह बहुउपयोगी है। यह अमरबेल की तरह है । जब तक यह पानी में रहेगी, यह कभी नष्ट नहीं होगी और न सड़ेगी। इसको सेवन करने के तरीके जानना जरूरी है। यह शरीर के लिए हर तरह से फायदेमंद होती है।

सौजन्यः
एमपीईडीए, क्षेत्रीय प्रभाग,
विजयवाड़ा

लीटोपिनस वन्नामी महाराष्ट्र
के लवणयुक्त जमीन के लिए वरदान

लीटोपिनस वन्नामी इस झींगे का संवर्धन अब पूरे भारत के तटीय राज्यो में बहुत प्रचलित हो गया है। लगभग सभी तटीय राज्यों के टाइगर झींगे के तालाब में वन्नामी का संवर्धन किया जा रहा है। वन्नामी झींगा पानी के सभी स्तर पर रहता है, और इसी वजह से प्रति चौ. मी. ज्यादा बीज डालकर जादा उत्पादन ले सकते हैं तथापि टाइगर झींगा निचले स्तर का ही उपयोग करता है और इसी वजह से लगभग सभी तटीय राज्यों के झींगा तालाब में आजकल वन्नामी का ही संवर्धन किया जाता है। वन्नामी के 15 से 35 से.मी. आकार के लिए अन्तर्राष्ट्रीय तथा स्थानीय बाजार में काफी मांग है यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है ।

लीटोपिनस वन्नामी का संवर्धन कम क्षारता के पानी में भी किया जा सकता है, देश के आंध्रा जैसे कुछ राज्यों में कम क्षारता में वन्नामी का संवर्धन किया जाता है। महाराष्ट्र में झींगा पालन केवल पांच तटीय जिलो में काफी मात्रा में किया जाता है। सी.आर. ज़ेड. और कांदलवन की वजह से उपलब्ध क्षेत्र भी सीमित है और राज्य सरकार की ओर से भी पिछले कई वर्षो से जगह पट्टे पर नहीं दी गयी है। इस बात पर ध्यान देते हुए अगर महाराष्ट्र में मत्स्य उत्पादन बढ़ाना है तो हमें महाराष्ट्र में उपलब्ध अंत:स्थलीय जिले के मीठे पानी के स्रोत पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। महाराष्ट्र में ज्यादा तर मीठे पानी में कार्प जाति की कटला, रोहु, मृगल आदि और मीठे पानी के झींगे का संवर्धन किया जाता है। मीठे पानी के झींगे के प्रजनन केंद्र कम होने के कारण बीज के लिए जादातर नैसर्गिक बीज संग्रह पर संवर्धकों को निर्भर रहना पड़ता है।

महाराष्ट्र के अकेले पुणे विभाग में 1000 हेक्टर से भी ज्यादा लवणयुक्त जमीन उपलब्ध है। अगर हम इस जमीन में से 25% जमीन भी वन्नामी झींगे के संवर्धन के लिए उपयोग में लाए तो महाराष्ट्र में झींगे का उत्पादन कम से कम प्रति वर्ष 2000 मीट्रिक टन बढ़ सकता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए एम. पी.ई.डी.ए. के क्षेत्रीय डिवीजन पनवेल ने कम क्षारता के लवणयुक्त जमीन में वन्नामी झींगे के संवर्धन का प्रदर्शन प्रयोग कोल्हापुर जिले के कुरुंद्वाड तालुका में किया। उसके अब तक के परीणाम को नजर में रखते हुए 0.2 हेक्टर से 1000 टन तक उत्पादन मिलने का अनुमान है। अगर इस तरह के प्रदर्शन प्रयोग लवणयुक्त जमीनवाले शेष तालुका में किए जायें और प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किए जायें तो हम अब तक अनुपयोगी मानी गयी इस जमीन में से 2000 मीट्रिक टन झींगा का उत्पादन अकेले महाराष्ट्र के पुणे विभाग से ले सकते हैं।

सौजन्यः
मंगेश गावडे
एमपीईडीए, क्षेत्रीय प्रभाग, मुंबई

एक आलू, दो अंडे और एक कॉफी बीन की कहानी

एक लड़की थी जो चौथी कक्षा में थी , उसके पिता एक बावर्ची थे। उनका शौक कई तरह का खाना पकाना था । एक दिन उसकी बेटी उदास चेहरे से उनके पास आई और खाने की मेज़ के सामने बैठी । उसने अपने बेटी को बहुत चिंतित तथा उदास पाया और उसकी उदासी के बारे में पूछा । उसने बताया कि चारों ओर दिन-ब-दिन हो रहे परिवर्तन से वो काफी चिंतित है इसके बारे में उसने अपने दोस्तों को भी बताया है । पिता यह सुनकर मुस्कुराए। चूँकि वह भोजन तैयार करने में व्यस्त था, अतः उसने आलू, दो अंडे और कॉफी बीन लिया और इन तीनों को एक कटोरी में डालकर अपनी बेटी को दिखाया । बेटी ने अपने पिता से उन चीज़ों के बारे में पूछा और इनका उसके द्वारा पूछे गए सवाल से संबंध के बारे में पूछा । पिता मुस्कुराए और इन तीनों चीज़ों को अलग-अलग कटोरी में पानी भरकर उबालने का काम शुरू किया। कुछ समय बाद पिता ने आग बंद की और तीनों कट ोरियों को बेटी को दिखाया ।

बेटी ने जो चीज़ें उबलने से पहले देखी थी, उबलने के बाद वे उसी अवस्था में नहीं थे । पिता ने उसमें हुए अंतर के बारे में बेटी को बताया: पहला, आलू जो पानी में डालने से पहले सक्त और ठोस था, उबलने के बाद नरम हो गया । दूसरा, अंडा जो उबलने से बहले बहुत नरम और जिसे आसानी से तोड़ सकते थे , अब वह मज़बूत हो गया। तीसरा: कॉफी बीन्स जो एक कच्चा बीज था, अब उबलने के बाद पानी में पिघल गया और पानी को भूरा रंग दे रहा है जिससे बहुत स्वाद और अच्छी महक आ रही है । पिता ने इन तीन वस्तुओं की मानव जीवन के साथ तुलना की और समझाया कि इसी तरह जीवन में कुछ भी स्थाई नहीं होता है, दिन-ब-दिन सबका परिवर्तन होता रहता है । पिता से विभिन्न प्रकार के लोगों और जीवन में आने वाले परिवर्तनों के बारे में सुनकर बेटी बहुत खुश हो गई ।

इस कहानी में एक आलू, अंडे और कॉफी बीन के ज़रिए तीन अलग -अलग प्रकार के लोगों के बारे में बताया गया है । इस दुनिया में कुछ भी स्थाई नहीं है, परिस्थिति के अनुसार लोग बदल जाते हैं । तो उन लोगों के बारे में चिंता न करें जो बदले हैं और बदलते हैं ....जिन्दगी सुंदर है, इसे हँसी -खुशी जियो।

सौजन्य:
श्री अलेक्स टी.हेज़कील
एमपीईडीए, क्षेत्रीय प्रभाग, विजयवाड़ा

पश्चिम बंगाल में ट्रांस-बाउंड्री जल के परंपरागत लाभों का विस्तार

गंगा और ब्रह्मपुत्र घाटियों में अंतर्देशीय जलमार्ग की नौवहन उपयोग के बढ़ावे पर दिनांक 17 अप्रैल, 2017 को द ओबेराय ग्रैंड, कोलकाता, पश्चिम बंगाल में आयोजित उप-राष्ट्रीय वार्ता (एसडीडी)

क्यूट्स इंटरनेशनल द्वारा द एशिया फाउंडेशन के समर्थन के साथ "ट्रांस-बाउंडरी जल के परंपरागत लाभों का विस्तार: गंगा और ब्रह्मपुत्र घाटियों में अंतर्देशीय जलमार्ग की नौवहन उपयोग के बढ़ावे" नामक परियोजना के एक भाग के रूप में एक उप-राष्ट्रीय वार्ता का आयोजन किया गया। बैठक का आयोजन दिनांक 17 अप्रैल, 2017 को कोलकाता के द ओबेरॉय ग्रैंड में हुई थी जिसका उद्देश्य था पश्चिम बंगाल से राज्य निदान अध्ययन पेश करना और निष्कर्षों पर एक विशेषज्ञ स्तर की चर्चा करना। विचार-विमर्श द्वारा वैकल्पिक और सहभागी नीति बातचीत को सक्षम करने में सहायता मिलेगी।

आजीविका को अंतर्देशीय जलमार्ग नौपरिवहन और विकास के लिए जोड़ना: क्यूट्स द्वारा बताया गया था कि मौजूदा और संभावित जल गलियारों और बंदरगाहों के प्रभावी उपयोग से बेहतर आर्थिक और विकास होंगे । विशेषज्ञों ने बताया कि जलमार्ग से जुड़ी आजीविका के विकास के लिए नदी पर्यटन क्रूयिस के माध्यम से संभव है, जैसा कि पहले ही ऊपर बताया गया है । इस के अलावा, मछुआरों को उनके पकड़ को बेहतर और अधिक बाज़ारों तक पहुँचाने का एक अवसर भी मिलेगा ।

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एमपीईडीए) से इस बैठक में भाग लेने वाले अधिकारी श्री दर्शन लाल ढौंडियाल, अनुभाग अधिकारी ने बताया कि नौकाओं में रेफ्रिजरेटर स्थापित करने के लिए 25 प्रतिशत सब्सिडी देकर एक तरह से एमपीईडीए मछुआरों को बेहतर आजीविका और आर्थिक लाभों को प्रोत्साहित करने की कोशिश कर रहा है । इन नावों को लंबे समय तक पकड़ की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है ताकि मछुआरे उनकी पकड़ को बंदरगाहों के निकटतम क्षेत्र से परे नीलामी बाज़ार में ले जाकर बेच सकते हैं ।

बैठक ने इस टिप्पणी पर निष्कर्ष निकाला कि सरकार, अंतर्देशीय जलमार्ग क्षेत्र को बहुत ही सकारात्मक तरीके से देख रहा है जो उनके हाल ही के पहलों से काफी स्पष्ट है । अतः अंतर्देशीय जलमार्ग को व्यावसायिक रूप से व्यावहार्य बनाने के लिए अंतर्देशीय जलमार्ग पर नीति को अधिक समावेशी और जमीनी वास्तविकताओं से प्रेरित और व्यपारिक महत्वाकांक्षाओं से प्रेरित होने की आवाश्कता है ।

सौजन्यः
दर्शन लाल ढौंडियाल,
एमपीईडीए, क्षेत्रीय प्रभाग,
कोलकाता

बंधनों से

मानव शरीर को दुर्लभ एवं बडभागी कहा गया है। क्योंकि यही मुक्ति का द्वार है। मुक्ति जिसका अर्थ है - छुटकारा अथवा निजात पाना। जब भी मुक्ति के संबंध में चर्चा होती है तो स्वाभाविक रूप से बंधन की बात भी याद आ जाती है कि मनुष्य संसार में जन्म लेते ही नाना प्रकार के बंधनो में बंधता जाता है।

बंधन किसी भी प्रकार के क्यों न हों, हमेशा दुःखदाई होते हैं। अज्ञानताजनित अहंकार के बंधन मनुष्य को दिखाई नहीं देते। उसे लगता है कि हाथ-पैर खुले हैं तो मैं कैद में नहीं हूँ । आंखें भी बंधनो को देख नहीं पाती क्योंकि ये अदृश्य बंधन हैं। कई बार मनुष्य जानते हुए भी नहीं जान पाता कि वह किन बंधनों में जकड़ा हुआ है।

यहाँ हमें स्वयं से प्रश्न करना आवश्यक है कि हम क्यों संसार में जन्म लेते हैं और क्यों एक दिन मर जाते हैं? क्यों मानव योनि को मुक्ति द्वार कहा गया है? क्यों हम नाना प्रकार के बंधनों में बंधकर रह जाते हैं और क्या इन बंधनों के दुष्चक्रों से छूटने का कोई उपाय है? हां, इन समस्त दुष्चक्रों से बच निकलने का उपाय है। ऐसे तत्वदर्शी सद्‌गुरु, जो पूर्ण परमात्मा के तत्व को क्षण भर में

‘मुक्ति’

जानने में सक्षम हो, की शरण में जाकर उनसे तत्वज्ञान प्राप्त करना। भक्ति करने के लिए सेवा, सुमिरन, सत्संग करें , तत्वज्ञान को कर्म में ढाल लें तो अवश्य ही नाना प्रकार के बंधनों के दुष्चक्रों से छुटकारा पाकर अपने मूल तत्व परमात्मा में विलीन हो सकते हैं। उस अवस्था में पहुँच सकते हैं जहां पहुँचकर फिर इस संसार में नहीं लौटना पड़ता, जहां सारा जन्म-मृत्यु का चक्र ही समाप्त हो जाता है।

अधिकतर मरने के बाद मुक्ति पाने की चर्चा होती है लेकिन ब्रह्मज्ञानी संत जीते जी मुक्त हैं। अजर-अमर-असंग-निर्लेप है, हर जगह, हर समय है ऐसे परमात्मा के सान्निध्य में है।

संसार में दो प्रकार के व्यक्ति देखने को मिलते हैं। एक सांसारिक दूसरा आध्यात्मिक । सांसारिक व्यक्ति अज्ञानता-अहंकार के कारण सम्पूर्ण पदार्थो के बंधनों मे बंधकर कर्म करता है। दूसरों के दोष देखता-ढूँढता रहता है। जब तक दूसरों के दोष दिखते हैं तब तक वह संसार मे खड़ा होकर दुखों में जोवन-यापन करता है, फिर भी बंधनों को नहीं छोड़ता। मरते समय शरीर को तो छोड़ना ही पड़ता है, साथ में संसार के सारे पदार्थों-रिश्तों को भी छोड़ना पड़ता है। अंतिम समय में जिसकी आसक्ति शेष रह जाती है उसे पुनःउसी योनि मे जन्म लेना पड़ता है। अर्थात जन्म-मरण का चक्र चलता ही रहता है।

दूसरी तरफ आध्यात्मिक व्यक्ति आत्मज्ञान की दृष्टि से जीवन में संसार के सारे पदार्थों-रिश्तों का त्यागपूर्वक उपभोग करता है। उसे दूसरों के नहीं हमेशा स्वयं के ही दोष दिखाई पड़ते हैं। दोषों का अंत करने के लिये वह निःस्वार्थ भाव से सेवा, सुमिरन, सत्संग के साथ ब्रह्मज्ञान को कर्म मे ढालकर सुख-आनंद से जीवन व्यतीत करता है। उसके लिए संसार अस्त हो जाता है। शरीर त्यागते समय भी उसे केवल निराकार ब्रह्म दिखाई देता है, इसी का सुमिरन करता है। सहज रूप मे ही अंदर का अंश(आत्मा) अपने असली अंशी(परमात्मा) में विलीन हो जाता है। फिर उस आत्मा को पुनःजन्म नहीं लेना पड़ता। फिर उसे जन्म-मरण के बंधनों से मुक्ति मिल जाती है।

सौजन्य :
नामदेव आर भोईनकर
एमपीईडीए, क्षेत्रीय प्रभाग, मुंबई

डिज़िटल इंडिया

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा डिजिटल इंडिया के रुप में एक महत्वकांक्षी अभियान की शुरुआत 1 जुलाई 2015 को दिल्ली में की गयी । दिल्ली में आरंभ हुए इस कार्यक्रम में सरकारी विभागों और प्रमुख उद्योगपतियों जैसे टाटा समूह के अध्यक्ष साइरस मिस्त्री, रिलायन्स इंडस्ट्रीज़ लिमिटेड के अध्यक्ष मुकेश अंबानी, विप्रो अध्यक्ष अजीम प्रेमजी आदि की मौजूदगी में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों ने भाग लिया। पूरे देश में डिजिटल संरचना का निर्माण, डिजिटल साक्षरता, डिजिटल तरीके से सेवा प्रदान करना जैसे डिजिटल इंडिया के तीन महत्वपूर्ण तत्व हैं । इसका लक्ष्य भारत को विश्व का बेहतर नियंत्रित स्थान बनाना है।

डिज़िटल इंडिया में डेटा का डिज़िटलाईजेशन आसानी से होगा जो भविष्य में चीजों को तेज और ज्यादा दक्ष बनाने में मदद करेगा। यह कागजी कार्य को कम करने, कार्य कुशलता में सुधार, समय और मानव श्रम की भी बचत करेगा । लगभग 250,000 गाँवों और देशों के दूसरे आवासीय इलाकों में तेजी से इंटरनेट कनेक्शन के लिए राज्य सरकार द्वारा एक योजना बनायी गयी थी जिसमें "भारत ब्रॉडबैंड नेटवर्क लिमिटेड" द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका अदा की गयी है । यह ब्रॉडबैंड हाइवे, लोक हित कार्यक्रम, मोबाईल कनेक्टिविटी, ई-क्रांति, ई-गर्वनेंस, सूचना, आईटी, शिक्षा, कृषि कार्यक्रम और इलेक्टॉनिक्स विनिर्माण में मदद करेगा । दूरसंचार और सूचना तकनीकी मंत्रालय

द्वारा इसकी संचालन व्यवस्था और अध्यक्षता की गई है। इसका कार्यान्वयन भारत के लिए सुनहरा अवसर होगा। यह योजना वास्तव में तेज गति की इंटरनेट सेवा के साथ दूर-दराज के गाँवों और ग्रामीण क्षेत्रों को जोडने के द्वारा खास तौर से भारत के ग्रामीण इलाकों में वृद्धि और विकास को सुनिश्चित करेगी । भारत में सभी शहर, नगर और गाँव ज्यादा तकनीकी होंगें । इस पूरी परियोजना की निगरानी प्रधानमंत्री खुद करेंगे । इससे आम जनता अपने कौशल स्तर और ज्ञान में सुधार कर सकते हैं ।

सरकारी सेवा और लोगों के बीच की दूरी के अंतर को मिटाने के लिए डिजिटलीकरण अभियान की ओर भारत के प्रधानमंत्री ने अपना श्रेष्ठ प्रयास किया है। इस अभियान से एक प्रभावशाली ऑनलाईन मंच के द्वारा शासन प्रणाली में लोगों को शामिल किया जाएगा । सरकार के द्वारा विभिन्न ऑनलाईन लक्ष्यों की प्राप्ति को सुनिश्चित किया जाएगा । यह दस्तावेजों और प्रमाणपत्रों को ऑनलाइन जमा करना संभव बनायेगा । ई-हस्ताक्षर द्वारा दस्तावेजों पर ऑनलाईन हस्ताक्षर की सुविधा ,ई-अस्पताल के माध्यम से ऑन लाईन पंजीकरण से फीस जमा करना, ऑनलाइन लाक्षणिक जॉंच आदि आसान होगी। कनेक्टिविटी से जुडे सभी संबंधित मुद्दों के लिए ब्रॉडबैंड हाइवे मदद करेगा और सभी शहरों, नगरों और गाँवों में एक क्लिक पर विश्व स्तरीय सेवा की उपब्धता को मुमकिन बनाएगा ।

हरेक गांव में ई-सेवा केंद्र स्थापित किया जाना चाहिए ताकि लोगों को इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से सभी सरकारी सेवाएं एक ही जगह उपलब्ध करायी जा सकें। केरल का "अक्षय केन्द्र" मॉडल सभी स्थानों पर बड़ी संख्या में सेवाएं उपलब्ध कराने में बेहद सफल रहा है । यहां लोगों को बिना मूल्य सेवाएँ उपलब्ध करायी जाती हैं । न्यायिक प्रणाली को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर लाकर उसे पुलिस विभाग, सीबीआई, फोरेंसिक आदि के साथ जोड़ा जाए ताकि अवांछित एवं जटिल प्रक्रिया से बचा जा सके। ई-वोटिंग के माध्यम से छात्रों को मतदान का अधिकार दिया जाए, जिससे पढाई के लिए दूर-दराज गए छात्र चुनाव के समय अपना मतदान ऑनलाइन ई-वोटिंग द्वारा कर सकें । इसकी आसानी के लिए सभी नागरिकों को एकल डिजिटल पहचान पत्र या एक नंबर सत्यापित किया जाना चाहिए। लोगों को यह नंबर सिर्फ याद रखना होगा । उस कार्ड या नंबर को डालते ही नागरिकों के सारे विवरण देखे जा सके, इससे नागरिकों को न सिर्फ आसानी होगी बल्कि भ्रष्टाचार कम करने में मदद भी होगी। कैशलेस अर्थव्यवस्था में नोटों का इस्तेमाल न्यूनतम स्तर पर होने के कारण जाली नोट की छपाई और आतंकवाद और आपराधिक गतिविधियों में कमी आएगी । भारी मात्रा में इस्तेमाल की जाने वाली नकदी काले धन व भ्रष्टाचार का मुख्य कारण होती हैं । कैशलेस व्यवहार होने पर आय व्यय की सभी जानकारी ऑनलाइन हो जाती हैं । जिससे सरकार को टैक्स इकट्ठा करने में बढोतरी होती है। प्रधानमंत्री जी के डिमॉनेटाइजेशन के बाद हमारा देश डिजिटल इंडिया बनने की ओर अग्रसर है । बैंक में नकद रखने से देश में विकास में मदद मिलती है। कैशलेस लेनदेन से खर्च में बचत होगी। डिजिटल इंडिया के तहत योजनाओं में सीधे और अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे ।

21 वीं सदी में भारत अपनी आम जनता की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए प्रयास करेगा जहां सरकार उनकी सेवाएँ जनता के दरवाजे पर उपलब्ध करेगी। डिज़िटल इंडिया कार्यक्रम का उद्देश्य आई टी की क्षमता को इस्तेमाल कर भारत को डिजिटल रुप से सशक्त समाज और ज्ञान में परिवर्तन लाना है जिससे देश की अर्थव्यवस्था भी तेज होगी ।

सौजन्य :
मृणालिनी परेश आरेकर,
एमपीईडीए, क्षेत्रीय प्रभाग, मुंबई

परिवार

(एक मार्मिक स्पर्श कथा)

मैंने अपनी मां को फोन पर रिश्तेदारों और दोस्तों को सुबकती हुई आवाज़ में यह खबर देते हुए सुना कि “वे लोग उनका वेंटिलेटर हटा रहे हैं”। उस दिन, वो हमें छोड़ कर जा रहे थे, हमेशा के लिए!!! मेरी माँ, फोन पर सुबकती हुई आवाज़ में एक एक करके सभी रिश्तेदारों और दोस्तों को यह खबर सुना रही थी ‘वे लोग आज शाम करीब 3 बजे वेंटिलेटर हटा देंगे। आप लोग उससे पहले आकर उन्हें देख सकते हो ।

उस दिन से एक हफ्ते पहले, उन्हें अस्पताल ले जाया गया और मेरे पापा, दादाजी को कार की पिछली सीट पर सीधा लिटा रहे थे। दादाजी के उस अंतिम अनकहे उत्तर को कभी नहीं भूल सकता जब मैं अपने आँसू रोकने की कोशिश करते हुए माँ से पूछ रहा था कि “क्या वो ठीक हो जाएँगे”। दादाजी ने मुझे बुलाया और हमेशा की तरह धीरे से मेरे बालों को सहलाया। परंतु, तुरंत छाती में उठ रही असह्य पीड़ा को रोकने की असफल कोशिश करते हुए छाती का बायाँ हिस्सा पकड़ते हुए उनका हाथ मेरे सर से फिसल गया। वह सामान्य रूप से साँस लेने के लिए संघर्ष कर रहे थे। ये वही थे जो, एक दिन स्कूल में मेरे इन्हेलर खो जाने और आस्थमा की वजह से सांस लेने में तकलीफ होने पर, भारी वर्षा में मेरे लिए इन्हेलर लेने करीब दौड़ते हुये बाज़ार गए थे । पर जब आज उनकी बारी आयी तो सिर्फ रोने के, मैं उनके लिए ज्यादा कुछ न कर सका। माँ ने मुझे गले लगाकर कहा कि दादा जी वापस आएंगे ।

उस दिन से पहले की रात, अस्पताल के रिसेप्शन में, मेरी माँ “ एक दिन तो यह होना ही है” कहकर मेरे व्यथित पिता से भाग्य को स्वीकार करने के लिए कह रही थी और उन्हें सांत्वना दे रही थीं। मैं समझ नहीं पा रहा था कि इसका क्या मतलब है, लेकिन आँखें मूंदकर भगवान से प्रार्थना करने लगा कि मेरे दादाजी जल्द ही ठीक हो जाएँ । मेरे दादाजी ने एक बार मुझसे कहा था कि बच्चों की प्रार्थनाएं सच्ची होती हैं और वे निश्चित रूप से भगवान तक पहुंच जाती हैं, लेकिन शायद ऐसा नहीं हुआ।

उस दिन हम 1 बजे अस्पताल पहुंचे । हम अंदर गए । उस दिन रिसेप्शन में सेक्यूरिटी ने मुझे नहीं रोका । मैं अपनी मां के साथ कदम से कदम मिलाते हुए दादाजी को भर्ती कराए गए आईसीयू की ओर सीढ़ियों चढ रहा था।

एक नर्स हमें कमरे में ले गईं । एक सप्ताह बाद मैं अपने दादाजी को देख रहा था - मेरे सबसे अच्छे दोस्त को। दादाजी अस्पताल के बिस्तर पर शांति से सो रहे थे। टीवी और रेडियो जैसे कई छोटे बॉक्स थे जिसमें छोटे लाइट्स थे । कुछ बाक्सों से ताल में “बीप - बीप” की आवाज़ आ रही थी । मुझे पता था कि यह आवाज़ मेरे सबसे अच्छे दोस्त - मेरे दादाजी की मंद होती धड़कन की है ।

फिर मैंने अपने पापा को लाल और सूजी हुई आँखों के साथ दादाजी के बिस्तर के पास बैठे देखा। मेरी मां खुद को संभाल नहीं पा रही थी । वह मेरे पापा के कंधे से लगकर ज़ोर ज़ोर से रोने लगी । मेरे पापा धीरे से खड़े हो गए और मेरी रोती मां को कमरे से बाहर ले गए।

मैं अपनी जिंदगी के सबसे प्यारे व्यक्ति के साथ अकेला रह गया था । मैं उनके करीब गया, जहां मेरे पापा कुछ समय पहले बैठे थे। मैंने अपने प्यारे दादाजी का चेहरा देखा। वहाँ कोई दर्द नहीं था - बस शांति थी। यहां तक कि उनकी नाक और मुंह में कुछ प्लास्टिक ट्युब्स और एक सफेद धूमिल गैस मास्क लगे होने के बावजूद उनका चेहरा काफी आकर्षक और सुंदर लगा। मैं दादाजी के बालों को सहलाने लगा । मैं चाहता था कि वो मेरा नाम लें ... सिर्फ एक बार ... यह वही मुंह था जिससे वो हर दिन मुझे कई कहानियाँ सुनाते थे, जब तक मैं सो नहीं जाता था। मैं उनकी आँखों के खुलने का इंतजार कर रहा था ... मुझे आखिरी बार देखने के लिए ... लेकिन वे सो रहे थे ... ये वो ही पुरानी आँखें थीं जो मेरे खिलौने, मेरी ड्राइंग, मेरा होमवर्क, मेरी मार्क शीट देखने का आनंद लेते हुए कभी नहीं थकती थीं ...फिर मैंने उनके हाथों को देखा। ये वो ही हाथ थे जो मेरे हाथों को सहलाते थे । मैंने उनकी हथेलियों को अपने दोनों हाथों से थामा । मैंने अपनी हथेली को उनकी हथेली के साथ मापने की कोशिश की। कुछ भी नहीं बदला था । उनकी हथेली अभी भी मेरी हथेली से बड़ी थी। मैंने उनकी तर्जनी को छुआ ... मैंने आखिरी बार इसे पकड़ा था .... इसे पकड़े रखना मुझे व्यस्त बाजारों और भीड़ भरे स्थानों में सुरक्षित होने का अहसास दिलाता था......

मैंने अपनी जेब से अपना इन्हेलर निकाला और उसे पास की एक मेज पर रख दिया जहां पहले से ही कई दवाएं बिखरी पड़ी थीं । मुझे याद आया कि एक बार दादाजी ने मुझे बताया था कि इन्हेलर मेरा जीवन रक्षक है । मैं दादाजी के कान में धीरे से बोला, "दादाजी चिंता मत करो, तुम जल्दी ही ठीक हो जाओगे। मैंने तुम्हें बचाने के लिए इन्हेलर रखा है। "...

"लड़का हुआ है" "मेरे पिता की उत्साहपूर्ण आवाज से मैं वर्तमान में वापस आ गया । आज, अठारह साल बाद, उसी अस्पताल के उसी मंज़िल में , मैंने अपने पापा को एक नर्स की ओर भागते हुए देखा, जो एक नवजात बच्चे को उठाए खड़ी थी । "तुम वहां क्या कर रहे हो... आओ ... इसे देखो ... यह पूरा तुम्हारे दादा जैसा दिखता है, बच्चे को अपनी बाहों में उठाए हुए पापा अत्यधिक खुशी से चिल्ला रहे थे।

लेकिन अपने नवजात पुत्र के स्थान पर मुझे अपने पिता में दादा जी नजर आए । जीवन का एक नया चक्र शुरू हो चुका है ... एक बार फिर अपने आप को दोहराने के लिए।

इन्टरनेट में अक्तूबर 07, 2011 को प्रकाशित डाई हेक्से द्वारा अँग्रेजी में लिखी **"फैमिली"** नामक कहानी का हिन्दी अनुवाद-

श्रीमती तुलसी नायर
एम पी ई डी ए मुख्यालय, कोच्ची

लोकप्रियता की और हमारी हिंदी

विश्व के अधिकांश विद्वानों व भाषाविदों ने इस तथ्य को स्वीकार कर लिया कि विश्व में हिन्दी जानने वाले सर्वाधिक हैं तथा मंदारिन दूसरे स्थान पर है। हिन्दी विश्व में सबसे अधिक बोली व समझी जाती है तथा यह विश्व की सबसे लोकप्रिय भाषा है । हिन्दी जाननेवालों की संख्या विश्व में सबसे अधिक है तथा यह निरंतर बढ़ती जा रही है । इससे यह सिद्ध होता है कि हिन्दी विश्व की सबसे लोक प्रिय भाषा है ।

"हिन्दी विश्व में सबसे लोकप्रिय भाषा है" - यह तथ्य भी निर्विवाद रूप से सिद्ध हो चुका है। इस तथ्य को अब अधिकांश विद्वान स्वीकार करने लगे हैं । इसका एक प्रमाण यह भी है कि भारत के प्रधान मंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी ने संयुक्त राष्ट्र संघ सहित विश्व के अनेक देशों में अपना व्याख्यान हिन्दी में ही दिया, वह व्याख्यान संपूर्ण विश्व में लोगों ने बड़े चाव से सुना व समझा । आदरणीय मोदी जी के सम्मान में इन कार्यक्रमों को भी हिन्दी में ही प्रसारित किया गया था। हिन्दी भाषा की लोकप्रियता और उसका प्रभामंडल केवल भारत या भारत के पडोसी देशों तक ही सीमित नहीं है बल्कि सुदूर कैरेबियाई राष्ट्रों तक फैला है। मारीशस, फीजी, गुयाना, सूरीनम, ट्रिनियाड और टोबेगो जैसे देशों में यह राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित है। इतना ही नहीं बल्कि इंडोनेशिया, अमेरिका, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, अफ्रीका और खाड़ी के देशों में हिन्दी बहुत लोकप्रिय है । विश्व की 18% जनता हिन्दी जानती है। इसलिए अनेक देश अपने प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रोनिक मीडिया में हिन्दी को स्थान दे रहे हैं । इतना ही नहीं भारतीय फिल्में और टी.वी.चैनलों के कार्यक्रम भी विश्व के कई देशों में चाव से देखे जाते हैं।

नब्बे के दशक के उपरान्त जब उदारीकरण व सार्वभौमीकरण अर्थात् लिबरलाइज़ेशन एवं ग्लोबेलाइज़ेशन का दौर भारत में चला तब ज्यादातर विचारकों का मत था कि ग्लोबेलाइज़ेशन से भारत के आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य में आमूचूल परिवर्तन हो जाएगा ।

आर्थिक दृष्टि से विदेशी पूँजीवाद फिर से शुरू हो जाएगा तथा हमारा सांस्कृतिक ताना-बाना ध्वस्त होकर पूरी तरह विदेशी संस्कृति हम पर हावी हो जाएगी व हमारी भारतीय भाषाएं तथा विशेषतः हिन्दी विलुप्त प्रायः हो जाएगी । हिन्दी व भारतीय भाषाओं का स्थान अंग्रेज़ी ले लेगी । परन्तु यह हर्ष का विषय है कि ऐसा कुछ नहीं हुआ जैसे पूर्वानुमान लगया जा रहा था । यह सत्य सिद्ध नहीं हुआ ।

ऐसा ही चिंतन उस दौर में भी आया था जब भारत में कंप्यूटरों का आगमन हुआ था।अर्थात् 1980 के दशक से यह चिंतन चलने लगा था और लोगों को यही भय सता रहा था, परन्तु भारत में भाषा प्रौद्योगिकी ने काफी विकास किया है तथा आज हम, सब काम हिन्दी में व क्षेत्रीय भाषाओं में करने में सक्षम हैं । सोशियल मीडिया में भी हिन्दी काफी तेज़ी से आगे बढ़ रही है ।

यह जानकर दु:ख होता है कि आधुनिक्ता के इस दौर में भारतीय जन मानस को कुछ नफासत पसंद और अंग्रेज़ी में मानसिकता के लोग यह कह कर भ्रमित कर रहे हैं कि अब बिना अंग्रेज़ी जाने भारतीयों का कोई भविष्य नहीं है । यह नितांत हास्यास्पद है तथा यथार्थ इसके विपरीत है । इस दौर में हिन्दी भाषा का इतना विकास हुआ कि स्टार चैनल के रूर्पट मार्डोक को अपने स्टार कार्यक्रमों को टी आर पी बढ़ाने के लिए हिन्दी में लाना पड़ा। हिन्दी का वर्चस्व निरंतर बढ़ता ही जा रहा है तथा आज वह उस मुकाम पर पहुँच गई है जहाँ उसकी लोक प्रियता और ग्राह्यता को कोई अन्य भाषा चुनौती नहीं दे सकती है। हिन्दी आज विश्व में मनोरंजन की दुनिया में सबसे आगे है । यही कारण है कि सोनी, जी टी वी, डिस्कवरी चैनल, विदेशी 'कार्टून कार्यक्रम" भी भारत में व हमारे पड़ोसी देशों में हिन्दी में प्रसारित होने लगे हैं ।

भारत की सांस्कृतिक विरासत इतनी व्यापक है कि विश्व में इसकी तुलना किसी अन्य सभ्यता और संस्कृति से नहीं की जा सकती है । भारतीय वेद अर्थात् ऋग्वेद को अंतर्राष्ट्रीय ख्याति एवं विश्व थाती (धरोहर) का दर्जा तो पहले ही मिल चुका था। अब अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 175 देशों के समर्थन से संयुक्त राष्ट्र संघ ने 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मान्यता दी है । 10 जनवरी संसार के कई देशें में विश्व हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है । भारत और हिन्दी दोनों का वर्चस्व विश्व स्तर पर दिनों दिन बढता ही जा रहा है । यह हमारे लिए गर्व का विषय है ।

विश्व में हिन्दी की लोकप्रियता को देखते हुए विश्व के 150 से अधिक देशों में हिन्दी शिक्षण एवं प्रशिक्षण के अनेक शिक्षण माध्यम शुरू हो गए हैं। इस बात का प्रमाण है कि विश्व में हिन्दी के प्रति अधिक झुकाव है। हिन्दी अध्यापन अपने संघों, हिन्दी संस्थाओं द्वारा चलाया जा रहा है । केन्द्र सरकार द्वारा भी हिन्दी अध्ययन हेतु हिन्दी शिक्षण योजना आदि चलायी जा रही है । विश्व के अनेक विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्व विद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन तेज़ी से चल रहा है। भारत में केन्द्र सरकार के प्रयासों व स्वयं सेवी संस्थाओं के प्रयासों से हिन्दी सीखने वालों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है।

आनेवाले समय में हमारा युवा भारत, विश्व की महाशक्ति बनने जा रहा है । इस लिए हिन्दी के प्रति विश्व स्तर पर लोकप्रियता में निरंतर बढ़ोत्तरी हो रही है। इस प्रवृत्ति से सहज ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि निकट भविष्य में हिन्दी को संयुक्त संघ की अधिकृत भाषा के रूप में भी महत्व मिलेगा व यह "विश्व भाषा" के पद पर भी आसीन होगी । भारत में तो हर भारतीयों के दिल और आत्मा में इसको स्वीकार्यता मिल चुकी है "हिन्दी विरोध" बीते कल की बात हो चुकी है । समस्त दक्षिण भारत में हिन्दी धीरे-धीरे सम्पर्क भाषा का ध्वज धारण किए आगे बढ़ती जा रही है। यह आनेवाले समय का संकेत है। धार्मिक स्थलों पर तो हिन्दी पहले से ही लोक प्रिय थी। अब हिन्दी, उद्योग, व्यापार, शिक्षा एवं मनोरंजन के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण स्थल ले चुकी है । भारत की युवा पीढ़ी की पसंदीदा भाषा हिन्दी ही है । आज भारत की युवा पीढ़ी भाषा के मामले में व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाती है । अत: यह दृष्टिकोण हिन्दी की लोकप्रियता बढाने में और भी अधिक सहायक होगा ।

सौजन्य :
राजभाषा अनुभाग, एम पी ई डी ए,
मुख्यालय, कोच्ची

हिन्दी में कार्यालय टिप्पण, पत्राचार हेतु मानक शब्द एवं वाक्यांश

A	
a brief note is placed below	संक्षिप्त टिप्पणी /नोट नीचे रखी है
above cited	ऊपर दिया गया, ऊपर उद्धृत
above given	उपरिलिखित, उपरिनिर्दिष्ट
above mentioned	उपर्युक्त, ऊपर उल्लिखित
above named	ऊपर नामित
above quoted	उपर्युक्त
B	
background of the case	विषय/मामले की पृष्ठभूमि / का आधार
balance of payment	भुगतान संतुलन
basic pay scale	मूल वेतनमान
before cited	पूर्व कथित
before hand	पहले
before issue	जारी करने से पहले, निर्गमन पूर्व...
C	
Calculations and rates checked by	ने गणना और दरों की जांच की
Calendar month	कैलेण्डर महीना/मास
Calendar year	कैलेण्डर वर्ष
Call for explanation	स्पष्टीकरण मांगना
Called upon	आग्रह किया जाना/करना
Call for quotation	भाव/कोटेशन मंगाना
D	
daily allowance	दैनिक भत्ता
dated signature	दिनांक-सहित हस्ताक्षर
day-to-day administrative work	प्रतिदिन /नित्य का कार्य, दैनिक कार्य/ प्रतिदिन /नित्य का/ दैनंदिन/दैनिक प्रशासनिक कार्य
day –to-day promotion	दैनिक पदोन्नति
dealing officer	संबंधित कर्मचारी
dealing hand	संबंधित अधिकारी/व्यक्ति

E	
each case will be considered on merits	प्रत्येक/मामले पर उसके गुण-दोष के आधार पर विचार किया जाएगा
early orders are solicited	शीघ्र आदेश अपेक्षित है
editing the matter	सामग्री का संपादन
educational qualifications	शैक्षिक अर्हताएं
effective date	प्रभावी तारीख, अमल में आने की तारीख
F	
facts of the case may kindly he furnished	कृपया मामले/प्रकरण के तथ्य प्रस्तुत करें
file has been delinked	फाइल अलग कर दी गई है
failed to appear for the test	परीक्षा में नहीं बैठा
failed to fulfill the conditions	शर्तों का पालन करने में असफल
failing which	न कर पाने पर, न हो पाने पर
G	
gazette notification	गजट अधिसूचना
general administration	सामान्य प्रशासन
general application	सामान्य प्रयोग
general circular	सामान्य परिपत्र
general practice	सामान्य प्रथा, सामान्य परंपरा/कार्य पद्धति....
H	
half year ending	को समाप्त होनेवाली छमाही
hand over charge	कार्यभार/पदभार सौंपना
hard and fast rule	पक्का नियम, सुनिश्चित नियम
has been reduced	कम किया गया है
has been removed	हटा दिया गया है
I	
I agree	मैं सहमत हूँ,
I agree with 'A' above	मैं उपर्युक्त 'क' से सहमत हूं
I am directed to...	मुझे निदेश हुआ है कि.....
I am to add that	मुझे यह भी सूचित करना है कि...
I am to state	निवेदन है
J	

joining period will be availed later	कार्यग्रहण अवधि बाद में ली जाएगी
joining report is submitted	कार्यग्रहण सूचना प्रस्तुत कर दी गयी है
joint representation	संयुक्त अभिवेदन
jointly and severally	संयुक्त और पृथक
justification for the proposal	प्रस्ताव का औचित्य
K	
keep going	जारी रखें, चलता रहे
keep in abeyance	रोक/स्थगित रखा जाए
keep pending	निलंबित रखा जाए, निर्णयार्थ रोक रखा जाए
keep with the file	फाइल के साथ रखिए
keeping in view	ध्यान में रखते हुए
L	
lack of confidence	आत्मविश्वास का अभाव
lack of means	साधनों का अभाव
lack of quality	गुण्वत्ता का अभाव...
laid down in	में निर्धारित/निर्दिष्ट
last pay certificate	अंतिम वेतन प्रमाणपत्र
M	
made to order	आदेशानुसार बनाया गया/निर्मित
mailing list	डाक सूची
maintenance of account	हिसाब रखना, लेखा रखना,खाता रखना
maintenance allowance	निर्वाह भत्ता
material facts should not be ignored	वास्तविक/ महत्वपूर्ण तथ्यों को छोड़ा न जाए/ नजर अंदाज न किया जाए
N	
nature of work	कार्य का प्रकार / स्वरूप
necessary action	आवश्यक कार्रवाई
necessary action may be taken/initiated	आवश्यक कार्रवाई की जाए/ प्रारंभ की जाए
necessary clarification awaited	आवश्यक स्पष्टीकरण की प्रतीक्षा है
necessary draft is put up	आवश्यक प्रारूप /मसौदा प्रस्तुत है
O	
objectionable action	आपत्तिजनक कार्रवाई

observance of rule	नियम का पालन
observation made above	उपर्युक्त विचार/मत
obtain formal sanction	औपचारिक मंजूरी/संस्वीकृति
obtain signature	हस्ताक्षर करवाइए....
P	
paid into the credit of …..	के खाते/नाम जमा करने के लिए अदा किया जाए
papers for disposal	निपटाने के लिए पत्रादि/कागज़-पत्र
papers submitted/put up for perusal	पत्रादि/कागज-पत्र अवलोकनार्थ प्रस्तुत
papers under consideration	विचाराधीन पत्र
papers verified	कागज-पत्रों का सत्यापन किया गया
Q	
qualified candidate	अर्हता प्राप्त /योग्य उम्मीदवार
qualifying marks	अर्हक अंक
qualifying service	अर्हक सेवा
quantum of remuneration may please be fixed	कृपया पारिश्रमिक की मात्रा निश्चित करें/की जाए
quarantine leave	संगरोध छुटटी
R	
raise objection	आपत्ति उठाना
raised question	उठाया गया प्रश्न
ranging from…to..	…से लेकर…तक
rate of exchange	विनिमय दर
rate in force	चालू/प्रचलित दर
S	
said rule	उक्त नियम
salient provisions	मुख्य-मुख्य / प्रमुख उपबंध
salvage and scrap	कबाड़ और रद्दी
sanction is hereby accorded to	… को इसके द्वारा मंजूरी दी जाती है.
sanction may be accorded for the	…के अतिरिक्त पदों के सृजन
creation of the additional posts of …..	के लिए मंजूरी/ संस्वीकृति दी जाए
T	
table of contents	विषय सूची
tabulated statements	सारणीबद्ध विवरण....

take care of	.... की देखभाल करना .....का ध्यान रखना
take effect	प्रभावी होना
take for granted	मान लेना, मानकर चलना, यह मान लिया जाए
U	
ultimate objective	अंतिम लक्ष्य, अंतिम उद्देश्य
unable to do	करने में असमर्थ, अक्षम
unadjusted account	असमायोजित खाता/लेखा
unclassified categories	अवर्गीकृत श्रेणियां
V	
verified copy	सत्यापित प्रतिलिपि
vested power	निहित अधिकार
visitor's book	आगंतुक पुस्तिका
viva voce	मौखिक परीक्षा
W	
waiting list is prepared	प्रतीक्षा सूची बनायी गयी है
waiting list may be renewed	प्रतीक्षा सूची को नवीकृत किया जाए
warning is given	चेतावनी दी जाती है/ दी गयी है
ways and means committee	अर्थोपाय समिति
Y	
year after year	वर्ष-प्रति-वर्ष, वर्ष-दर-वर्ष
year to year	प्रति वर्ष, वर्षानुवर्ष, वर्ष-दर-वर्ष
yearly return	वार्षिक विवरणी
yearly statement	वार्षिक विवरण
Z	
Zonal Advisory Committee	आंचलिक परामर्श समिति
zonal council	आंचलिक परिषद
zonal office	आंचलिक कार्यालय

संकलनः
सिन्धु ए एस
एम पी ई डी ए, मुख्यालय, कोच्ची

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण को हिन्दी गृह पत्रिका के लिए कोच्ची टोलिक की राजभाषा शील्ड

श्रीमती सुष्मिता भट्टाचार्य, प्रभारी, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, कोच्ची से वर्ष 2015-16 हेतु हिन्दी गृह पत्रिका 'सागरिका' के लिए कोच्ची टोलिक की राजभाषा शील्ड प्राप्त करते हुए श्री बी श्रीकुमार, सचिव, समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण को हिन्दी गृह पत्रिका के लिए कोच्ची टोलिक की राजभाषा शील्ड

श्रीमती सुष्मिता भट्टाचार्य, प्रभारी, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, कोच्ची से वर्ष 2016-17 हेतु हिन्दी गृह पत्रिका 'सागरिका' के लिए कोच्ची टोलिक की राजभाषा शील्ड प्राप्त करते हुए श्री बी श्रीकुमार, सचिव, समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण
(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय भारत सरकार)
एमपीईडीए भवन, पनंपिल्ली एवन्यू, डाक पेटी सं 4272,
कोच्ची- 682036, भारत

मुद्रकः
सेंट फ्रांसिस प्रेस, सेंट बेनडिक्ट रोड,
कच्चेरिप्पडी, एरणाकुलम
फोन सं.: 0484 2391456